ईरान के लिए हम खुश लेकिन... पेज 5

दैनिक

कारखाने का सफर

आजकल आदमी की दिनचर्या कारखाने की तरह दिन-रात चल रही है, इस दिनचर्या पर ही इस अखबार का नाम रखा गया है

कामदेव ने साधा नारद को ... पेज 7

वर्ष 6, अंक 111 | भोपाल, रविवार 2 नवंबर, 2025 | कार्तिक शुक्ल पक्ष, द्वादशी, 2082 | मूल्य 2 रुपए

(ब्रेकिंग न्यूज- पार्ट 2)

भेल कर्मचारियों की टाउनशिप खत्म, प्रबंधन बोला कि स्पोर्टस काम्पलेक्स और सभी गेस्ट हाउस के साथ अधिकारियों के बंगले अभी हमारे पास

- निजी कॉलोनियों के समान हो गए कर्मचारियों की टाउनशिप, करीब तीन हजार से ज्यादा हैं खाली क्वाटर
- राज्य सरकार खाली भूमि लेने के फिराक में थी, तभी भेल प्रबंधन चाल चल गया और सब कुछ ठेके पर दे दिया
- साढ़े 6 हजार एकड़ भूमि पर कारखाने, स्पोर्टस काम्पलेक्स व बंगलों को छोड़कर अन्य भूमि का सही उपयोग नहीं कर पाया।
- भेल की ज्यादातर भूमि पर अवैध कब्जे और एम्स सहित कई विभागों के पास चली गई भूमि
- प्रबंधन का अजीब तर्क कि अभी हमारे पास स्पोर्टस काम्पलेक्स, गेस्ट हाउस, ईडी बंगला व अधिकारियों के मकान है, भविष्य का कुछ नहीं कह सकते
- भेल कर्मचारी सिर्फ कारखाने के अंदर तक सिमट गए, सभी खाली मकान और खाली भूमि ठेके पर दे दी तो भविष्य में कस्तूरबा असपताल, सभी डिस्पेंसरियां, सभी यूनियन कार्यालय भी ठेकेदार के कब्जे में चले जाएंगे

दैनिक कारखाने क सफर । भोपाल

भेल टाउनशिप एक विहंगम दृश्य

भोपाल के लिए बड़े ही शर्म की बात है कि भेल कर्मचारियों की भेल टाउनशिप अब ठेकेदारों के पास चली गई है। किसी समय सपनों की नगरी के नाम से भेल टाउनशिप को जाना जाना जाता था और इसको साफ सुधरा और सुंदर बनाए रखने के लिए कर्मचारी संगठन निगाह रखते थे। भेल कर्मचारियों ने आवासों को मालिका हक देने के लिए भी लंबी लड़ाई लड़ी और मकनों की दुर्दशा को देखते हुए रिनोवेशन का भी काम करने की मांग की गई, लेकिन कर्मचारियों की बात सुनने के बजाए प्रबंधन ने टाउनशिप ही खत्म कर दी यानि न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी। वहीं एक लंबे समय से मालिका हक मांग रहे बाजारों के दुकानदार भी ठगे गए। भेल के पूर्व प्रबंधन ने अपनी एक-एक भूमि बचाने के लिए कब्जेधारियों, नेताओं और यहां तक प्रदेश सरकार से संघर्ष किया। वहीं वर्तमान प्रबंधन ने तुगलकी तरीका ढूंढा कि भूमि और मकान ठेके पर ही दे दिया। प्रबंधन ने जो भी शर्त रखी हो, लेकिन भेल कर्मचारियों को भी मांगलिक उद्यान श मांगलिक भवन आवंटन कराना होगा तो ठेकेदार के पास ही जाना पड़ेगा। जबकि कर्मचारी संगठन, भेल लेडीज क्लब या भेल की अपनी सांस्कृतिक संस्था भेकनिस को कम से कम मैदान आवंटन और मांगलिक उद्यान व भवन को सौंपा जा सकता था। अफसोस की बात यह है कि भेल प्रबंधन ने अपने ही कर्मचारियों पर भरोसा नहीं किया। अब आगे देखते हैं भेल स्पोर्टस काम्पलेक्स कब ठेकेदार के हाथों सौंपा जा सकता है। अगर यही हाल रहा तो अगला टेंडर सीनियर क्लब और शेष बचे मार्केट का भी हो सकता है।

भेल नगर प्रशासन का अब क्या काम : सबसे खास बात यह है कि पूरी टाउनशिप ही टेंडर प्रक्रिया से खत्म की जा रही है, तो भेल का नगर प्रशासन अब कौनसा काम करेगा। सिर्फ टेंडर प्रक्रिया और सुपरविजन के अलावा क्या काम रहा। वहां पर अपरमहाप्रबंधन स्तर के अधिकारियों तक का काम खत्म हो गया। अतिक्रमण हटाने और मकानों का मेंटेनेंस से भी नगर प्रशासन को मुक्ति मिल गई। गोविंदपुरा में खाली मकान और मैदान पर सबसे ज्यादा अवैध कब्जे हुए हैं। उसको लेकर भेल प्रशासन बिल्कुल भी गंभीर नहीं है। अन्ना नगर से रायसेन रोड तक भूमि और आवास लावारिस पड़े हुए हैं। टाउनशिप की सफाई व्यवस्था पहले ही भेल नगर निगम भोपाल को सौंप चुका है।

इनका कहना है

'खाली मकान और मांगलिक उद्यानों व भवन को ही ठेके पर दिया गया है। इसमें मार्केट की दुकानें और पार्क भी शामिल हो सकते हैं। अभी इस बारे में कुछ नहीं कह सकते कि भविष्य में क्या हो।'

-उपेंद्र कुमार सिंह, भेल प्रवक्ता

-(सोमवार के अंक में पढ़िए ब्रेकिंग न्यूज पार्ट 3)

जादूगर प्रिंस दिखाएंगे जादुई करतब, बाबा अमरनाथ गुफा में देंगे दर्शन

प्रदेश के सबसे बड़े भोजपाल महोत्सव मेले का 14 नवम्बर से भव्य आगाज

राजधानी के भेल दशहरा मैदान पर 49 दिनों तक आयोजन

दैनिक कारखाने क सफर । भोपाल

राजधानीवासियों का पसंदीदा भोजपाल महोत्सव मेला इस साल 14 नवंबर से शुरू होने जा रहा है। मेले में दर्शकों के मनोरंजन के लिए कई खास आकर्षण जोड़े गए हैं। राजधानी के भेल दशहरा मैदान पर शुरू हो रहे प्रदेश के सबसे बड़े भोजपाल महोत्सव मेले में शहरवासियों को इस बार बहुत कुछ नया देखने को मिलेगा। एक ओर जादूगर प्रिंस अपनी जादुई करतब दिखाएंगे तो दूसरी ओर बाबा अमरनाथ मेले में आने वाले लोगों को दर्शन देंगे। इसके लिए मेला परिसर में भव्य झांकी तैयार की जाएगी। पारंपरिक झूले, फूड स्टॉल और सांस्कृतिक कार्यक्रम मेले की शान बढ़ाएंगे। 14 नवंबर को भव्य उद्घाटन के साथ यह महोत्सव शुरू होगा। मेले को लेकर तैयारियां शुरू हो गई हैं। इस मेले का शहरवासी बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।

मेले में होगा जादू, भक्ति का संगम : मेला इस बार मनोरंजन और आस्था का संगम बनने जा रहा है। यहां लोगों को जादू और भक्ति का समागम देखने को मिलेगा। एक ओर जादूगर प्रिंस अपने हैरतअंगेज करतब दिखाएंगे, तो दूसरी ओर बाबा अमरनाथ के भव्य दर्शन का सौभाग्य मिलेगा। मेला परिसर में अमरनाथ यात्रा की झांकी तैयार की जा रही है, जिससे श्रद्धालु मेले में ही बाबा के दर्शन कर सकेंगे। जादूगर प्रिंस का शो जहां बच्चों और युवाओं को रोमांच से भर देगा, वहीं यह भव्य झांकी भक्तों के बीच आस्था का केंद्र बनेगी।

मेले में डंकी शो और रोबोटिक एनीमल होंगे खास : 14 नवंबर से शुरू होने वाले भोजपाल महोत्सव मेले में डंकी शो और रोबोटिक एनीमल खास होगा। मेले में पहली बार दिखाए जाने वाले यह खास शो, बच्चों के लिए बड़ा आकर्षण होगा। मेला समिति के अध्यक्ष सुनील यादव ने बताया कि इस साल मनोरंजन के केंद्र में 'डंकी शो' और 'रोबोटिक एनीमल' खास होंगे। रोबोटिक एनीमल शो में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए जानवरों की हूबहू प्रतिकृतियां दिखाई जाएंगी, जो बच्चों और युवाओं के लिए विज्ञान और मनोरंजन का बेहतरीन मिश्रण होगा। वहीं, 'डंकी शो' में हास्य और रोमांच का तडक़ा होगा। मेला समिति ने बताया कि इन नए शो को जोडऩे का उद्देश्य परिवार के हर सदस्य को कुछ नया देना है।

मेले में आ रहा देश का सबसे बड़ा 'रोलर कोस्टर'

मेले में इस बार रफ्तार की दुनिया के दीवानों के लिए ख़ास इंतज़ाम किए गए हैं! मेला समिति ने बताया कि इस साल का मेला रोमांच से भरपूर होगा। इस बार देश का सबसे बड़ा रोलर कोस्टर भोपाल आ रहा है। साथ ही अत्याधुनिक और दिल दहला देने वाले झूले जैसे टॉवर, रेंजर, ऑक्टोपस, और ब्रेक डांस भी मेले का हिस्सा होंगे। ये झूले बच्चों और बड़ों, दोनों को रोमांच की नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए तैयार हैं। मेले में सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखा जाएगा, ताकि हर कोई इस रोमांच का सुरक्षित ढंग से मज़ा ले सके।

भेल जनसेवा समिति द्वारा आयोजित भोजपाल महोत्स्व मेला की शुरुआत 14 नवम्बर को शाम सात बजे से भजन संध्या के साथ की जाएगी। अध्यक्ष सुनील यादव ने बताया कि विगत 11 वर्षों से मेले का सफल आयोजन किया जा रहा है। मेले का यह 12वां वर्ष है। 14 नवम्बर से 1 जनवरी तक 49 दिनों तक चलने वाले इस मेले में राजधानी सहित आसपास के क्षेत्रों, जिलों और नगरों से करीब 20 लाख लोग शिरकत करते हैं।

आटोमोबइल से लेकर ऑर्ट गैलरी, इंटीरियर तक होंगी दुकानें

भोजपाल महोत्सव मेला में ऑटोमोबाइल, इलेक्टॉनिक, टेलीकॉम, फर्नीचर, हैन्डी क्रॉफ्ट, हैन्डलूम, महासेल, विभिन्न प्रकार के स्वादिस्ट व्यंजन, बैंकिंग इंश्योरेंस, ऑर्ट गैलरी, इंटीरियर, महिलाओं की सौंदर्य सामग्री, खूर्जा क्राकरी, कपड़े सहित विभिन्न प्रकार की दुकानें होंगी।

सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक आयोजन का संगम है मेला

यह मेला सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक आयोजन का पारिवारिक संगम है। मेले में रंगारंग सांस्कृति आयोजनों में सूफी नाइट, रॉक बैंड, विभिन्न प्रदेशों के लोकनृत्य, कल्चरल प्रोग्राम के साथ भोजपुरी और बॉलीबुड कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। मेले में केंद्र और राज्य सरकार की प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

ब्रह्मकुमारी शांति शिखर में बोले पीएम मोदी- 'मुझे आपकी शक्ति का अंदाजा है'

दैनिक कारखाने क सफर । एजेंसी नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नवा रायपुर में ब्रह्माकुमारी संस्थान के 'एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड' का उद्घाटन किया। उन्होंने छत्तीसगढ़, झारखंड और उत्तराखंड के स्थापना दिवस पर बधाई दी और राज्यों के विकास को देश के विकास की नींव बताया। पीएम मोदी ने ब्रह्मकुमारी संस्था के साथ अपने पुराने जुड़ाव को याद किया और उनके सेवा कार्यों की सराहना की। उन्होंने 'ओम शांति' के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

डिजिटल डेस्क, नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवा रायपुर के सेक्टर-20 में नवनिर्मित ब्रह्माकुमारी संस्थान का भव्य शांति शिखर रिट्रीट सेंटर 'एकेडमी फॉर ए पीसफुल वर्ल्ड' का उद्घाटन किया। 1.5 एकड़ में ये शांति शिखर ध्यान केंद्र बना हुआ है। पीएम के साथ राज्यपाल रमेन डेका और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय भी मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रह्माकुमारी संस्था के शांति शिखर कार्यक्रम में शामिल होकर छत्तीसगढ़ सहित झारखंड और उत्तराखंड के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि आज का दिन विशेष है, क्योंकि तीनों राज्य अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, "राज्यों के विकास में ही देश का विकास निहित है। इसी मंत्र पर चलते हुए हम भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के अभियान में जुटे हैं।"

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस महत्वपूर्ण यात्रा में ब्रह्मकुमारी जैसी संस्थाओं की भूमिका बेहद अहम है। उन्होंने बताया कि उनका इस आध्यात्मिक आंदोलन से दशकों पुराना जुड़ाव रहा है। उन्होंने कहा, "मैंने ब्रह्मकुमारी संस्था को वटवृक्ष की तरह बढ़ते हुए देखा है। 2011 में अहमदाबाद में 'फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम हो या 2012 में संस्था के 75 वर्ष का उत्सव, माउंट आबू और गुजरात के कार्यक्रमों में जाना मेरे जीवन का हिस्सा रहा है।"

प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि दिल्ली आने के बाद भी उन्हें कई अवसरों पर ब्रह्मकुमारी संस्था से जुड़ने का मौका मिला — चाहे वह आजादी के अमृत महोत्सव का अभियान हो या स्वच्छता अभियान। पीएम मोदी ने कहा, "जब भी मैं आपके बीच आया हूं, मैंने आपके प्रयासों को गहराई से महसूस किया है। यहां शब्द कम, सेवा ज्यादा है। मुझे आपकी शक्ति का अंदाजा है और मैं शक्ति का पुजारी हूं।"

उन्होंने संस्था से अपने व्यक्तिगत लगाव का भी उल्लेख किया और कहा, "इस संस्थान से मेरा अपनापन हमेशा रहा है। जानकी दीदी का स्नेह और राजयोगिनी दादी योगिनी जी का मार्गदर्शन मेरे जीवन की विशेष स्मृतियों में शामिल हैं।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन की प्रमुख बातें

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज का दिन विशेष है, क्योंकि छत्तीसगढ़, झारखंड और उत्तराखंड — तीनों राज्य अपने स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर रहे हैं।

उन्होंने सभी राज्यों के नागरिकों को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं और कहा कि राज्य का विकास ही देश के विकास की नींव है।

PM मोदी ने कहा कि भारत को विकसित बनाने के अभियान में ब्रह्माकुमारी जैसी संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रधानमंत्री ने भाव व्यक्त करते हुए कहा, "मैं यहां अतिथि नहीं, आपका ही एक सदस्य हूं।"

अजीत डोभाल के भाषण में बांग्लादेश, श्रीलंकर और नेपाल का जिक्र आते ही पाकिस्तान की बेचैनी बढ़ी

दैनिक कारखाने क सफर । एजेंसी नई दिल्ली

राष्ट्रीय एकता दिवस पर राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) अजीत डोभाल ने जब शासन और राष्ट्रनिर्माण के गहरे संबंध पर अपनी बात रखी, तो यह केवल प्रशासनिक विमर्श नहीं था— यह भारत और उसके पड़ोसी क्षेत्र के बदलते सामरिक परिदृश्य पर एक गंभीर टिप्पणी थी। सरदार वल्लभभाई पटेल की स्मृति में आयोजित व्याख्यान में डोभाल ने स्पष्ट कहा कि "शासन ही किसी राष्ट्र की शक्ति का वास्तविक आधार है", और इसके अभाव में साम्राज्य, लोकतंत्र या किसी भी व्यवस्था का पतन निश्चित है। उन्होंने हाल ही में बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल में हुए सत्ता परिवर्तनों का उदाहरण देते हुए कहा कि यह सब "खराब शासन" के परिणाम हैं। यह टिप्पणी केवल पड़ोसी देशों की स्थिति पर नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और भारत की सुरक्षा चिंताओं पर भी सीधा इशारा करती है। दक्षिण एशिया में शासन की गुणवत्ता अब केवल घरेलू मसला नहीं रही; यह भू-राजनीतिक स्थिरता का निर्णायक कारक बन चुकी है।

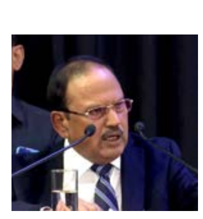

डोभाल के शब्दों में, भारत इस समय एक "ऑर्बिटल शिफ्ट", यानी परंपरागत शासन ढांचों से एक नयी दिशा की ओर बढ़ रहा है। यह परिवर्तन केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि वैचारिक, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर भारत की भूमिका को भी पुनर्परिभाषित कर रहा है। उन्होंने सरदार पटेल की उस दृष्टि का स्मरण कराया जिसके बल पर विविधता से भरे इस देश को एक संगठित राष्ट्र-राज्य में बदला गया था। आज, उसी दृष्टि को पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि शासन केवल नौकरशाही का उपकरण न रहकर राष्ट्रीय सुरक्षा का कवच बन सके। देखा जाये तो डोभाल का दृष्टिकोण महज़ सैद्धांतिक नहीं है; यह रणनीतिक अनुभव से उपजा है। एक सुरक्षा विशेषज्ञ के रूप में वे जानते हैं कि कमजोर शासन सबसे पहले संस्थानों को क्षीण करता है, फिर सामाजिक विश्वास को, और अंततः राष्ट्रीय सुरक्षा को। श्रीलंका का आर्थिक पतन, बांग्लादेश की अस्थिरता या नेपाल की बार-बार की राजनीतिक उठापटक, ये सभी उदाहरण बताते हैं कि जब शासन में स्पष्टता, निष्ठा और दीर्घदृष्टि का अभाव होता है, तो विदेशी प्रभाव, आंतरिक असंतोष और अस्थिरता साथ-साथ बढ़ते हैं। भारत के लिए यह स्थिति केवल पड़ोस की समस्या नहीं, बल्कि सीमा-पार सुरक्षा चुनौती भी है। इन देशों में अस्थिरता से उत्पन्न शरणार्थी संकट, आतंकवाद के नए ठिकाने, और बाहरी शक्तियों (विशेषकर चीन) की बढ़ती पैठ, सीधे भारत की सामरिक गणना को प्रभावित करते हैं। डोभाल की टिप्पणी इस अर्थ में चेतावनी भी है कि भारत को अपने 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति में शासन-सुधार को एक केंद्रीय तत्व बनाना चाहिए। साथ ही डोभाल का यह कहना कि "गवर्नेंस ही राष्ट्र को सुरक्षित और समृद्ध बनाता है", वास्तव में आधुनिक राज्यकला का सार है। मजबूत शासन का अर्थ केवल कानून-व्यवस्था या प्रशासनिक दक्षता नहीं, बल्कि नीतिगत स्थिरता, संस्थागत विश्वसनीयता और नागरिक सहभागिता है — यही वह त्रिवेणी है जिससे कोई भी राष्ट्र वैश्विक मंच पर आत्मविश्वास के साथ खड़ा हो सकता है। भारत आज जिस "ऑर्बिटल शिफ्ट" से गुजर रहा है— डिजिटल प्रशासन, नीति पारदर्शिता, रक्षा सुधार और अंतरराष्ट्रीय नेतृत्व में वृद्धि, यह सब सुशासन के ही आयाम हैं। परंतु, इस परिवर्तन की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि भारत अपने लोकतांत्रिक ढांचे में नीतिगत अनुशासन और संस्थागत मजबूती को कितना बनाए रख पाता है।

देखा जाये तो अजीत डोभाल के वक्तव्य को केवल प्रेरक भाषण के रूप में नहीं, बल्कि सामरिक नीति-संकेत के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। दक्षिण एशिया में शासन का संकट, भारत के लिए केवल कूटनीतिक नहीं बल्कि सुरक्षा-संबंधी चुनौती बन चुका है। भारत को, अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग के नए मॉडल तैयार करते हुए, गवर्नेंस-सपोर्ट डिप्लोमेसी को बढ़ावा देना होगा— ताकि क्षेत्र में स्थायित्व और विकास का संतुलन बना रहे। सच तो यह है कि "सुशासन ही सबसे बड़ा सुरक्षा कवच" है।

दैनिक कारखाने का सफर अखबार का संपादकीय कार्यालय

गोबिंद टॉवर, क्वालिटी रेस्टोरेंट के पास, एसबी स्टूडियों के ऊपर पिपलानी पेट्रोल पंप के पास, सोनागिरी चौराहा रायसेन रोड भेल भोपाल। मोबाइल नंबर: 9826035849, 9425006706

एमपी में पीएमश्री पर्यटन हेलिकॉप्टर सेवा का शुभारंभ

सीएम ने हरी झंडी दिखाई, 20 नवंबर से नियमित संचालन होगा

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस के मौके पर शनिवार को पर्यटन हेलिकॉप्टर सेवा भी शुरू हो गई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने राजा भोज एयरपोर्ट से सेवा का शुभारंभ किया। इस मौके पर मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी भी मौजूद थे।हालांकि, नियमित सेवा 20 नवंबर से ही शुरू होगी। भोपाल एयरपोर्ट से दोपहर में उड़ान हुई। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा, सरकार का प्रयास है कि हवाई यात्रा केवल परिवहन का साधन नहीं, बल्कि एक आनंददायक यात्रा का अनुभव भी बने। मध्यप्रदेश अपने नागरिकों और पर्यटकों को आधुनिक सुविधाओं के साथ संस्कृति की आत्मीयता भी प्रदान करेगा। उन्होंने कहा, हम प्रदेश की दूरियों को नहीं, बल्कि दिलों और अनुभवों को भी जोड़ने जा रहे हैं। हेलीकॉप्टर सेवा पर्यटन के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेगी। यह सुविधा न केवल पर्यटकों और यात्रियों का समय बचाएगी, बल्कि उन्हें एक ही यात्रा में आस्था, आध्यात्म, पर्यटन और अनुभव का अद्भुत संगम भी प्रदान करेगी। इसका उद्देश्य प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों को हवाई मार्ग से जोड़कर दूरियां मिटाकर समय बचाना भी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा, राज्य में एयर एम्बुलेंस और हेलीकॉप्टर पर्यटन सेवा (इंट्रा स्टेट एयर सर्विसेज) प्रारंभ करने वाला मध्यप्रदेश पूरे देश में पहला और इकलौता राज्य बन गया है। मुख्यमंत्री ने राजा भोज एयरपोर्ट में उन्नयन कार्यों का शुभारंभ किया। इन सेवाओं में 'पीएमश्री हवाई पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा', 'डिजी यात्रा', 'फ्लाईब्रेरी', 'किड्स प्ले जोन' और 'केट-I से केट-II ILS प्रणाली' जैसी अत्याधुनिक सुविधाएं भी शामिल हैं। कार्यक्रम में मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, कृष्णा गौर, विधायक रामेश्वर शर्मा, भगवानदास सबनानी और विष्णु खत्री भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री ने दोनों मंत्रियों को बोर्डिंग पास देकर इस हेली पर्यटन सेवा की प्रक्रियागत शुरुआत भी की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया, पीएमश्री पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा में प्रारंभिक चरण में तीन प्रमुख पर्यटन सेक्टर्स में हेली सेवाएं चलाई जाएंगी। प्राथमिक चरण में इंदौर से उज्जैन एवं ओंकारेश्वर, भोपाल से मढ़ई एवं पचमढ़ी और जबलपुर से बांधवगढ़ एवं कान्हा जैसे प्रमुख स्थलों तक हेलीकॉप्टर उड़ानें संचालित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि इस सेवा से पर्यटकों को कम समय में अधिक पर्यटन स्थलों की यात्रा करने की सुविधा मिलेगी। साथ ही, यह सेवा प्रदेश के ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में रोजगार सृजन, होम-स्टे व्यवसाय और स्थानीय उत्पादों के विपणन को भी बढ़ावा देगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस पहल से प्रदेश में हेलीकॉप्टर चार्टर कंपनियों, पर्यटन एजेंसियों, गाइड सेवा प्रदाताओं और महिला स्व-सहायता समूहों को भी नए अवसर प्राप्त होंगे।

मुख्यमंत्री ने दोनों मंत्रियों को बोर्डिंग पास देकर इस हेली पर्यटन सेवा की प्रक्रियागत शुरुआत भी की। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश के 70वें स्थापना दिवस के अवसर पर पीएमश्री हेलीकॉप्टर सेवा की अनुपम सौगात मिली है। इससे पर्यटकों को पैकेज के रूप में सभी तरह की सुविधाएं मिलेंगी। शुरुआती चरण में प्रदेश के 3 सेक्टर में पीएमश्री हेली सर्विस शुरू की जा रही है। भोपाल से मढ़ई-पचमढ़ी, इंदौर से उज्जैन-ओंकारेश्वर और जबलपुर से कान्हा-बांधवगढ़ सेक्टर पर पर्यटकों को हेलीकॉप्टर सुविधा मिलेगी। अभी भोपाल से सड़क मार्ग से पचमढ़ी जाने में साढ़े 5 घंटे लगते हैं, लेकिन नई पीएमश्री हेली सर्विस से पर्यटक सिर्फ 45 से 50 मिनट में पचमढ़ी पहुंच सकेंगे। पीएमश्री पर्यटन हेली सर्विस जबलपुर से कन्हा और बांधवगढ़ को लिंक करेगी। इंदौर से उज्जैन और ओंकारेश्वर के बीच हेलीकॉप्टर सेवा से एक दिन में दोनों ज्योतिर्लिंग के दर्शन हो जाएंगे। बाबा महाकाल की नगरी में प्रदेश का 9वां एयरपोर्ट विकसित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में पहली बार इंट्रा स्टेट एविएशन सर्विस की शुरुआत हुई है। रीवा से इंदौर के बीच 20 नवंबर से इंडिगो की सीधी हवाई सुविधा मिलेगी। रीवा से दिल्ली हवाई सेवा भी पूर्वी मध्यप्रदेश के लिए अद्भुत सौगात है। हमारी सरकार बनने के बाद प्रदेश में 3 नए एयरपोर्ट रीवा, सतना और दतिया में शुरू किए गए। बदलते दौर में रीवा तेजी से विकास करने वाला नगर बना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पर्यटन सेवाओं का यह विस्तार केवल सुविधाओं की शुरुआत नहीं, बल्कि 'आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश' के निर्माण की दिशा में एक सशक्त कदम है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक नई सेवा और सुविधा रोजगार, कौशल विकास और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाती है। मुख्यमंत्री ने बताया कि हमारी सरकार का लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक पर्यटकों की संख्या दोगुना की जाए और पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था का आकार 50,000 करोड़ रुपए तक पहुंचाया जाए। मध्यप्रदेश देश में इंट्रा स्टेट एयर कनेक्टीविटी संचालित करने वाला प्रथम राज्य है। पीएमश्री पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा प्रदेश में प्रमुख धार्मिक, वन्यजीव एवं प्राकृतिक पर्यटन स्थलों के बीच यात्रा अधिक सुविधाजनक और आकर्षक बनेगी। पीएमश्री पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा केवल एक योजना नहीं है, बल्कि यह मध्यप्रदेश के सुरक्षित, समृद्ध और सुखद भ्रमण की वह सुनहरी कुंजी है, जो अविस्मरणीय स्मृतियों के द्वार खोलती है। यह सेवा पर्यटकों के लिए विशेष रूप से कस्टमाइज्ड या टेलर मेड भी की जा सकेंगी। निर्धारित सेक्टर में यात्री अपने पसंदीदा पर्यटन स्थल चुन सकेंगे और हेलीकॉप्टर सेवा का आनंद ले सकेंगे। यह सेवा सिर्फ एक तयशुदा मार्ग नहीं है, बल्कि यह आपकी इच्छाओं के अनुसार ढल जाती है। आप अपने पसंदीदा पर्यटन स्थल चुन सकते हैं और हम आपकी उस यात्रा को पंख लगा देंगे।

फर्जी कॉल से 108 एम्बुलेंस परेशान, होगी एफआईआर, छह माह में 5 लाख शरारती फोन, बच्चों से रोमियो तक शामिल

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल समेत पूरे मध्यप्रदेश में सरकारी 108 एम्बुलेंस सर्विस को फर्जी कॉलर्स ने आपातकालीन खिलौना बना दिया है। पिछले छह महीनों में करीब 5.72 लाख फर्जी कॉल आने से न केवल कॉल सेंटर में स्टाफ परेशान हुआ, बल्कि 1500 घंटे एम्बुलेंस सेवा के बर्बाद हुए। कोई गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप के बाद एम्बुलेंस के कॉल सेंटर पर फोन कर अपनी आपबीती बताता है तो कोई सिर्फ मजे के लिए बार-बार कॉल करता है। जय अंबे हेल्थकेयर के सीनियर मैनेजर तरुण सिंह परिहार ने बताया कि अब ऐसे कॉलर्स पर एफआईआर दर्ज कराई जाएगी। इन कॉल्स के कारण कई बार जरूरतमंद मरीजों को समय पर एम्बुलेंस नहीं मिल पाती। 108 सेवा आपातकालीन है। इसे मजाक या टाइमपास के लिए इस्तेमाल करना अपराध है। गुरुवार को कोलार रोड के एक व्यक्ति ने 108 पर कॉल किया कि उसकी तबीयत बहुत खराब है। एम्बुलेंस 15 मिनट में घर पहुंची, लेकिन न कोई बीमार मिला, न परिवारजन। जब ईएमटी ने कॉलर को फोन किया तो उसने कहा अब सब ठीक है, जरूरत नहीं। करीब 30 मिनट ऐसे ही बर्बाद हो गए। यह अकेला मामला नहीं, ऐसे सैकड़ों कॉल रोज आते हैं।

कॉल सेंटर के आंकड़ों के मुताबिक, कुछ कॉलर्स तो 150 से 200 बार बिना वजह फोन करते हैं। इनमें बच्चे, नशे में धुत युवक और रोमियो टाइप लोग शामिल हैं। कुछ कॉलर्स तो कॉल सेंटर में बैठी महिला स्टाफ से बातचीत करने या उन्हें परेशान करने के लिए बार-बार कॉल करते हैं। इन कॉलर्स के नंबर ट्रैक कर भविष्य में सीधा कानूनी एक्शन लिया जाएगा। इसके लिए कंपनी एक स्टडी कर रही है, जिससे इनकी पहचान की जा सके।

भोपाल के हाई सिक्योरिटी जोन में फायरिंग करने वाला गिरफ्तार

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के हाई सिक्योरिटी जोन राजभवन के पास एमपी ऑनलाइन की शॉप संचालक पर फायरिंग करने वाले आरोपी को पुलिस ने मुरैना से गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उसकी मदद करने वाले दो युवकों और एक महिला को भी गिरफ्तार किया है। इतना ही नहीं पुलिस ने उसके पास से लाइसेंसी बंदूक भी बरामद कर ली है। एडीसीपी जोन-2 गौतम सोलंकी के मुताबिक फाइन एनक्लेव बीमाकुंज कोलार निवासी गोपाल विजयवर्गीय (45) राजभवन के पास शॉप नंबर-12 रोशनपुरा में श्रीश्याम ऑनलाइन एंड ई-टिकट नाम से शॉप चलाते हैं। 24 अक्टूबर की शाम गोपाल का बेटा श्याम विजयवर्गीय दुकान पर बैठा हुआ था। तभी आरोपी दीपेंद्र गुर्जर आया और क्यूआर कोड में 30 हजार रुपए की रकम ट्रांसफर करने के बाद वह विवाद करने लगा। आरोपी ने रकम को अपने खाते में ट्रांसफर करा लिया, लेकिन कैश देने में आनाकानी की। बार-बार रकम मांगने पर उसने दुकानदार पर फायर कर दिया।

इतना ही नहीं उसने लाइसेंसी गन से फायरिंग कर दी थी। आरोपी दीपेंद्र गुर्जर भाजपा नेता लोकेंद्र सिंह गुर्जर का ड्राइवर था। आरोपी दीपेंद्र को पकड़ने के लिए पुलिस की चार टीमें लगी हुई थीं। पुलिस ने घेराबंदी कर मुरैना से दीपेंद्र को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही फरारी के दौरान उसकी मदद करने वाले साहिब सिंह, गुलअफशा और देशराज सिंह को भी गिरफ्तार कर लिया। इससे पहले पुलिस रेलवे स्टेशन के पास से गाड़ी को जब्त कर चुकी है। एडीसीपी गौतम सोलंकी ने बताया कि आरोपी दीपेंद्र ने भाजपा नेता लोकेंद्र सिंह गुर्जर की लाइसेंसी बंदूक से फायर किया था। चूंकि इस मामले में शस्त्र लाइसेंस की शर्तों का उल्लंघन किया है, इसलिए उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है। इस संबंध में कलेक्टर भोपाल को भी पत्र लिखा जा रहा है।

हजारों श्रद्धालुओं के आगमन से क्षेत्र में धार्मिक उत्सव का माहौल

एकादशी पर श्री कपिलेश्वर महादेव मंदिर में ध्वजारोहण के साथ कार्तिक मेले का शुभारंभ

दैनिक कारखाने का सफर। सारंगपुर

एकादशी के पावन अवसर पर शनिवार, को सारंगपुर स्थित प्राचीन श्री कपिलेश्वर महादेव मंदिर परिसर में कार्तिक मेला का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) कौशल विकास एवं रोजगार विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल के डॉ. गौतम टेटवाल द्वारा विधिवत पूजन-अर्चन एवं ध्वजारोहण कर किया गया।

कार्तिक मास की एकादशी से प्रारंभ यह मेला हर वर्ष की तरह इस बार भी धर्म, श्रद्धा और लोक संस्कृति का अद्भुत संगम लेकर आया है। मेले के दौरान श्रद्धालु कालीसिंध नदी में पवित्र स्नान कर कपिलेश्वर महादेव के दर्शन करेंगे। साथ ही हरिहर मिलन और नगर गौरव दिवस जैसे विशेष कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। मेले की तैयारियों को लेकर पूर्व में हुई प्रशासनिक बैठकों में राज्यमंत्री डॉ. गौतम टेटवाल जी ने स्वच्छता, पेयजल, विद्युत आपूर्ति, यातायात व्यवस्था और सुरक्षा की सुदृढ़ व्यवस्थाओं के निर्देश दिए थे। उनके निर्देशन में नगर पालिका, प्रशासन और पुलिस विभाग ने संयुक्त रूप से समुचित तैयारियाँ सुनिश्चित की हैं। मेले में अस्थाई पार्किंग स्थल, विशेष पुलिस बल की तैनाती और निगरानी व्यवस्था की गई है ताकि श्रद्धालुओं व व्यापारियों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

मेले में मनोरंजन के झूले, पारंपरिक बाजार, साज-सज्जा सामग्री, हस्तशिल्प और स्थानीय व्यंजन श्रद्धालुओं का मन मोहित करेंगे। दूर-दराज़ क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु सारंगपुर आयेंगे, जिससे नगर में आस्था और उल्लास का अनूठा वातावरण निर्मित होगा।इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष पंकज ललित पालीवाल, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष महेश पुष्पद,नगर पालिका उपाध्यक्ष प्रतिनिधि निलेश वर्मा,पार्षदगण गोपाल पाल, अमित गिरजे, राकेश पुष्पद,पार्षद प्रतिनिधि बाबूलाल अहिवार, कुलदीप राठौर, भानु लवंशी, सुनील बागवान, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) रोहित बम्होरे,मुख्य नगर पालिका अधिकारी ज्योति सुनहरे, उपयंत्री अरुण गौड़,राजस्व उपनिरीक्षक सूर्यप्रकाश झाला,स्वच्छता प्रभारी सतीश कंडारे,दारोगा जितेन्द्र भैरवे, तथा निकाय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण सहित नपा स्टाफ उपस्थित रहा।

भोपाल में युवाओं ने की विशेष पूजा-अर्चना, महिला विश्व कप फाइनल से पहले की शिव स्तुति

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

महिला क्रिकेट विश्व कप के फाइनल से पहले राजधानी भोपाल में भारतीय टीम की जीत के लिए विशेष पूजा-अर्चना की गई। शनिवार को सेवा संकल्प युवा संगठन के युवाओं ने शीतलदास की बगिया स्थित भोलेनाथ मंदिर में अभिषेक किया और भारत की विजय की कामना की। संगठन के अध्यक्ष प्रकाश मालवीय ने बताया कि, "हमारे संगठन ने इससे पहले भी पूर्व विश्व कप के दौरान भोलेनाथ का अभिषेक किया था, तब भारत को विजय प्राप्त हुई थी। उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए आज भी हमने भगवान भोलेनाथ से प्रार्थना की है कि कल भारत की महिला टीम दक्षिण अफ्रीका को हराकर देश का तिरंगा विश्व विजेता के रूप में लहराए।

अभिषेक के दौरान युवाओं ने जयघोष के साथ देश की टीम के लिए मंगलकामनाएं कीं और मंदिर परिसर में शिव स्तुति का पाठ भी किया। इस अवसर पर संगठन के संयोजक चेतन भार्गव, विवेक साहू, राजेश गोयल, यश जैन, विवेक श्रीवास्तव और अन्य श्रद्धालुओं ने भी अभिषेक किया

भोपाल चैंबर के चुनाव जनवरी में, घोषणा इसी महीने, 20 नवंबर तक बन सकेंगे नए सदस्य

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (बीसीसीआई) के चुनाव की प्रक्रिया इसी महीने नवंबर से ही शुरू हो जाएगी। वहीं, अगले साल जनवरी में चुनाव होंगे। यह जानकारी कार्यकारिणी की मासिक बैठक में दी गई।

मीटिंग में निर्णय लिया गया कि गतिविधि शुल्क जमा करने एवं नए सदस्य बनने के लिए 20 नवंबर तक की अवधि रहेगी। ताकि, ज्यादा से ज्यादा सदस्यता हो सके। वहीं, 25 नवंबर को चेंबर की ओर से आगामी चुनाव की घोषणा कर दी जाएगी। इसमें चुनाव की तारीख, चुनाव अधिकारी की नियुक्ति, परीक्षकों की नियुक्ति, नामांकन भरने की तिथि, मतदाता सूची का प्रकाशन आदि शामिल हैं। बैठक में कार्यवाहक अध्यक्ष आकाश गोयल, महामंत्री आदित्य जैन मन्या, कोषाध्यक्ष कृष्ण कुमार बांगड़ भी मौजूद थे।

बैठक में बताया गया कि जनवरी-26 माह के मध्य में भोपाल चैंबर के चुनाव कराए जाएंगे। बता दें कि भोपाल चैंबर आर्थिक रूप से बहुत मजबूत हुआ है। वर्तमान में चैंबर के पास एफडीआर एवं बचत खाते को मिलाकर एक करोड़ एक लाख 85 हजार रुपए है।

अक्टूबर महीने में चैंबर काफी सुर्खियों में रहा था। 3 अक्टूबर की देर रात अध्यक्ष पाली ने अचानक अपना इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने महासचिव जैन को लेटर भी लिखा था। इसमें कहा कि 3 साल 9 महीने पहले मैंने पद ग्रहण किया था और तब से अभी तक पूर्ण रूप से अपना कार्य निभाया। आगामी चुनाव की तारीख 15 दिसंबर से 15 जनवरी के बीच की घोषणा कर दी।इस बात को 15 दिन गुजरने के बाद भी किसी भी कार्यकारिणी सदस्य ने चैंबर ऑफिस में उपस्थित होकर आगे की कार्रवाई करने में रुचि नहीं दिखाई। इस पर मैंने निर्णय लिया है कि आगामी चुनाव में मेरे ऊपर कोई दोषारोपण न हो, इसलिए पद से इस्तीफा देता हूं। मेरे 3 साल 9 महीने के कार्यकाल में देख लिया कि कोई भी कार्यकारिणी सदस्य किसी भी कार्य में कोई रुचि नहीं लेता है। महासचिव साहब आपने भी आज तक चैंबर ऑफिस में उपस्थित होकर कोई पत्र व्यवहार नहीं किया। पाली के इस्तीफे के बाद कई बैठकों का दौर चला। इसके बाद उपाध्यक्ष गोयल को कार्यवाहक अध्यक्ष चुना गया।

संत शिरोमणि नामदेव जी महाराज जन्मोत्सव, देवउठनी एकादशी, तुलसी विवाह, बाबा खाटू श्याम जन्मोत्सव, शनिवार को बड़ी धूमधाम से मनाया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

जागृत एवं दर्शनीय तीर्थ स्थल दादाजी धाम मंदिर रायसेन रोड पटेल नगर भोपाल में शनिवार को प्रातः 10:00 बजे से गर्भग्रह परिक्रमा में स्थापित संत शिरोमणि नामदेव महाराज के जन्मोत्सव पर उपस्थित सभी भक्तों ने अभिषेक, विधि विधान से पूजन किया साथ ही देवउठनी एकादशी भगवान विष्णु जी की विधि विधान से पूजन, विष्णु भगवान के समक्ष बाबा खाटू श्याम का जन्मोत्सव पर पूजा अर्चना की गई, मंदिर प्रांगण में सांय 6:30 बजे से तुलसी विवाह में भगवान शालिग्राम और तुलसी माता के ऊपर सिंदूरी रंग में रगे हुए चावल चढ़ाकर कर पूजा की थाली में कपूर जलाकर तुलसी माता और शालिग्राम भगवान की आरती के पश्चात अंत में विवाह संपन्न होने के जयकारे लगाएं और भगवान को भोग लगाकर महाप्रसादी सभी भक्तों को वितरण किया गया। इस शुभ अवसर पर उपस्थित सभी भक्तों को श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन नामदेव एवं ट्रस्ट मनोज मोहन नामदेव, राजेंद्र चक्रवर्ती, अखिलेश श्रीवास्तव, मंदिर व्यवस्था समिति के सदस्य आर डी धुर्वे, पंडित राजेन्द्र पलिया एवं सभी भक्तों ने एक दूसरे को 1 नवम्बर 1956 अलौकिक संस्कृति से जगमगाते मध्यप्रदेश को स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दी गई। उपस्थित सभी भक्तों ने पुण्य लाभ प्राप्त किया।

एस एम रामनाथन, निदेशक (इंजीनियरिंग, अनुसंधान एवं विकास) द्वारा गुणवत्ता माह का शुभारंभ ऑनलाइन किया गया

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

एस एम रामनाथन, निदेशक (इंजीनियरिंग, अनुसंधान एवं विकास) द्वारा इस वर्ष का गुणवत्ता माह का शुभारंभ ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस अवसर पर 'BHELMAC' एप को भी लॉन्च किया गया तथा भोपाल इकाई में इसके क्रियान्वयन का विशेष उल्लेख किया।।

इस वर्ष की थीम – "सहयोग, नवाचार, उत्कृष्टता – मिलकर करें एक गुणवत्तापूर्ण भविष्य का निर्माण" है। रामनाथन ने आने वाले समय में एक टीम के रूप में मिलकर काम करना, निरंतर नवाचार करना, उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रयास करना तथा गुणवत्तापूर्ण उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुणवत्ता वाले भविष्य का निर्माण हम सभी की जिम्मेदारी है। हमारे सामूहिक प्रयासों और गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से हम बीएचईएल को और अधिक मजबूत बनाएं। उन्होंने सहयोगात्मक योजना, सक्रिय समस्या-समाधान और परिणाम-उन्मुख सोच अपनाकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि अपने ग्राहकों से की गई सभी प्रतिबद्धताएं उत्कृष्टता के साथ पूरी हों।

बैठक में प्रदीप कुमार उपाध्याय, महाप्रबंधक एवं इकाई प्रमुख, बीएचईएल, भोपाल ने गुणवत्ता माह में होने वाली गतिविधियों की समीक्षा की तथा भोपाल इकाई में 'BHELMAC' के क्रियान्वयन पर सभी के साथ जानकारी साझा की।

इस अवसर पर एवं टी यू सिंह, महाप्रबंधक (मानव संसाधन); सभी महाप्रबंधकगण; डीआरओ तथा गुणवत्ता विभाग के विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

कोलार में 11 करोड़ से फोर लेन का भूमिपूजन

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह और विधायक रामेश्वर शर्मा ने गुरुवार को मंदाकिनी चौराहा से अग्रसेन चौराहा (दानिश गिरधर परिसर) तक बनने वाली 2.40 किमी लंबी व्हाइट टॉपिंग फोर लेन सड़क का भूमिपूजन किया। परियोजना की लागत 11.52 करोड़ रुपए है और इसे 11 माह में पूरा किया जाएगा। मंत्री राकेश सिंह ने कहा कि हुजूर विधानसभा विकास की मिसाल बन चुकी है, जबकि शर्मा ने बताया कि कोलार भोपाल का पहला उपनगर है जहां एक सिक्स लेन और तीन फोर लेन सड़कों का निर्माण हो रहा है।

भगवान झूलेलाल और अग्रसेन महाराज पर अपशब्द कहने वाले अमित बघेल के खिलाफ भोपाल में बवाल, डॉ. दुर्गेश केसवानी ने दी सख्त चेतावनी

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ क्रांति सेना और जोहार छत्तीसगढ़ पार्टी के प्रमुख अमित बघेल द्वारा की गई अत्यंत आपत्तिजनक टिप्पणियों के खिलाफ मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में सिंधी और अग्रवाल समाज का आक्रोश फूट पड़ा है। शनिवार को जाग्रत हिंदू मंच ने पुलिस कमिश्नर भोपाल को ज्ञापन सौंपा और बघेल पर कठोर दंडात्मक कार्रवाई की मांग की।

अमित बघेल ने हाल ही में छत्तीसगढ़ महतारी की मूर्ति तोड़े जाने के बाद दिए गए एक बयान में कहा था, "पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, अग्रसेन महाराज की मूर्ति क्यों नहीं टूटती? उनकी मूर्ति पर पेशाब क्यों नहीं करते? कौन है अग्रसेन महाराज? चोर है या झूठा?" इस बयान के बाद अग्रवाल समाज और सिंधी समाज में तीव्र रोष फैल गया है। लोगों का कहना है कि इस टिप्पणी से न केवल समाज की धार्मिक भावनाएं आहत हुई हैं, बल्कि राष्ट्रीय विचारधारा के महान प्रतीकों का भी अपमान हुआ है।

अब सिर्फ निंदा नहीं, कानून का कठोर प्रहार जरूरी है : डॉ. दुर्गेश केसवानी

जाग्रत हिंदू मंच के संरक्षक डॉ. दुर्गेश केसवानी ने कहा, "अमित बघेल जैसे तत्व केवल सोशल मीडिया पर नफरत फैलाने और हिंदू समाज को बांटने की कोशिश कर रहे हैं।

ये वही मानसिकता है जो हमारे महापुरुषों — पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, श्री अग्रसेन महाराज और भगवान झूलेलाल — के आदर्शों को मिटाने का सपना देखती है। हम सरकार से कहना चाहते हैं अब सिर्फ निंदा नहीं, कानून का कठोर प्रहार जरूरी है। अगर इस व्यक्ति पर तत्काल एफआईआर और गिरफ्तारी नहीं होती, तो हिंदू समाज सड़कों पर उतरने को तैयार है। जो हमारी आस्था पर वार करेगा, उसे कानून के साथ-साथ समाज का भी जवाब मिलेगा।"

यह सिर्फ समाज नहीं, राष्ट्र का अपमान है : सुनील कुमार जैन

मंच के संयोजक सुनील कुमार जैन ने कहा, "अमित बघेल की टिप्पणी सिर्फ किसी समाज पर नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रवादी सोच पर हमला है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे व्यक्तित्वों का अपमान करना देश की आत्मा को ठेस पहुंचाने जैसा है।

हम प्रशासन से मांग करते हैं कि इस बयान को गंभीरता से लेते हुए भारतीय न्याय संहिता की सख्त धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जाए।"

शांति चाहते हैं, लेकिन अपमान बर्दाश्त नहीं : सौरभ गंगारमानी

हिंदू मंच के सह-संयोजक सौरभ गंगारमानी ने कहा, "हम हमेशा शांति और संवाद के पक्षधर रहे हैं, लेकिन जब बार-बार हमारे देवताओं और महापुरुषों का अपमान किया जाएगा, तो समाज की सहनशीलता भी जवाब देगी। हमारी मांग है कि इस तरह के तत्वों पर रोक लगे और भविष्य में कोई व्यक्ति धार्मिक या सामाजिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने की हिम्मत न करे।"

ज्ञापन में उठाई सख्त कार्रवाई की मांग : जाग्रत हिंदू मंच द्वारा दिए गए ज्ञापन में कहा गया है कि अमित बघेल का यह कृत्य भारतीय न्याय संहिता की धारा 299 के अंतर्गत गंभीर अपराध की श्रेणी में आता है।

ज्ञापन में मांग की गई है कि उनके खिलाफ तुरंत आपराधिक प्रकरण दर्ज कर दंडात्मक कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में कोई भी व्यक्ति धार्मिक प्रतीकों या समाज के आदर्श पुरुषों का अपमान करने का दुस्साहस न करे। इस अवसर पर जागृत हिंदू मंच के प्रतिनिधि मंडल में मंत्री योगेश मालानी कोषाध्यक्ष अनिल मोटवानी सहित पीयूष वाधवानी, विनय भुरानी एवं भीष्म सोभानी उपस्थित रहे

बरखेड़ा पठानी के हनुमान मंदिर में सन्त शिरोमणी नामदेव महाराज की 755 वीं जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

बरखेड़ा पठानी के हनुमान मंदिर में सन्त शिरोमणी नामदेव महाराज की 755 वीं जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई, प्रातः 10 बजे पूजा अर्चना के बाद सत्यनारायण भगवान की कथा हुई, ततपश्चात महिलाओं ने सन्त नामदेव के भजनों का गायन प्रस्तुत किया। उसके बाद महाआरती हुई फिर महाप्रसाद का वितरण कर समापन हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष तुलाराम नामदेव ने पार्षद नीरज सिंह, सुरेंद्र वाड़िका का स्वागत किया और समस्त नामदेव समाज के उपस्थित वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया।

कार्यक्रम में उपस्थित पार्षद-नीरज सिंह, सुरेन्द्र वाडिका, गोपाल नामदेव, तरुण चुडामणि, ओमप्रकाश नामदेव, तुलाराम नामदेव, चंद्रराज नामदेव, विनोद, ब्रजमोहन नामदेव, नारायण प्रसाद, मनोज, हरिओम, लीला घर, आशुतोष नामदेव हेमन्त नामदेव उपस्थित थे।

मालूम बातों का दोहराव!

भारत में सेवा क्षेत्र की केंद्रीय भूमिका है, लेकिन इसके भीतर अधिकांश कर्मियों को रोजगार सुरक्षा या सामाजिक संरक्षण हासिल नहीं है। अर्थव्यवस्था में सबसे ज्यादा योगदान के बावजूद सेवा क्षेत्र के कर्मी निम्न वेतन जाल में फंसे हुए हैं। नीति आयोग ने समस्या पर रोशनी डाली है, लेकिन ठोस समाधान सुझाने में विफल रहा है। समस्या है सेवा क्षेत्र में रोजगार की खराब स्थिति। आयोग ने कहा है- 'भारतीय आर्थिक ढांचे में सेवा क्षेत्र केंद्रीय स्थल पर है, लेकिन इसके भीतर अनौपचारिक क्षेत्र का हिस्सा बेहद बड़ा है, जहां अधिकांश कर्मियों को रोजगार सुरक्षा या सामाजिक संरक्षण हासिल नहीं है।' अर्थव्यवस्था में सबसे ज्यादा योगदान के बावजूद सेवा क्षेत्र के कर्मी निम्न वेतन जाल में फंसे हुए हैं। सेवा क्षेत्र अर्थव्यवस्था में योगदान 55 फीसदी से अधिक है, मगर यह कुल रोजगार में इसका हिस्सा एक तिहाई ही है- और उसमें भी ज्यादातर कम वेतन वाली और अनौपचारिक नौकरियां हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 2023-24 के अंत तक सेवा क्षेत्र में 18 करोड़ 80 लाख लोगों को काम मिला हुआ था। मगर रोजगार का यह क्षेत्र 'गहरे ढांचागत विभाजन' का शिकार है। एक तरफ सूचना तकनीक, वित्त, स्वास्थ्य, और पेशेवर सेवाओं में उच्चस्तरीय रोजगार हैं, तो दूसरी ओर अनौपचारिक क्षेत्र है जिसके भीतर 55.7 प्रतिशत कर्मी स्वरोजगार श्रेणी में आते हैं। बिना सामाजिक सुरक्षा वाले वेतनभोगी कर्मियों की संख्या 29 फीसदी है। 9.2 प्रतिशत लोग घरेलू कामकाज में सहायक की भूमिका निभा रहे हैं, जबकि 6.2 प्रतिशत दिहाड़ी मजदूर हैं। स्पष्ट है, सेवा क्षेत्र ज्यादातर कर्मियों को किसी तरह जीने का सहारा भर दे रहा है। लेकिन उससे ऐसे उपभोक्ता तैयार नहीं हो सकते, जो बाजार का विस्तार करें। तो आयोग ने कहा है कि सेवा क्षेत्र के लिए नए नीतिगत नजरिए की जरूरत है, जिसका मकसद इस क्षेत्र को औपचारिक रूप देना हो। मगर ऐसा कह भर देने से तो नहीं होगा! महिलाओं और युवाओं में कौशल विकसित करने, डिजिटल एवं ग्रीन अर्थव्यवस्था की तकनीक में निवेश करते हुए उसके लिए कर्मी तैयार करने, और संतुलित क्षेत्रीय विकास की नीतियां लागू करने जैसे नीति आयोग के सुझाव गौरतलब हैं। मगर मुद्दा यह है कि ये काम कौन करेगा? क्या सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी निजी क्षेत्र पर डालने के लिए वैधानिक उपायों पर सख्ती से अमल के लिए सरकार तैयार है? क्या इसके लिए सरकार अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप की भूमिका अपनाएगी?

नाकामी में छिपे सबक!

विशेषज्ञों को जरूर मालूम होगा कि कृत्रिम बारिश के लिए आसमान में बादलों की कैसी मौजूदगी जरूरी होती है। इस ज्ञान का इस्तेमाल ना करने के कारण उन्होंने दिल्लीवासियों की अपेक्षाएं बढ़ाई और उन्हें पूरा करने में नाकाम रहे। राष्ट्रीय राजधानी में क्लाउड सीडिंग के जरिए कृत्रिम बारिश कराने की कोशिश की नाकामी में कई सबक छिपे हैं। पहले तो इससे यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति जाहिर हुई है कि तकनीक संस्थान एवं विशेषज्ञ सरकारों की मंशा के मुताबिक चलने की ऐसी मानसिकता का शिकार हो गए हैं कि मानों उन्होंने स्वतंत्र राय देने से तौबा कर लिया है। वरना, आईआईटी कानपुर के विशेषज्ञ बिना ठोस परिस्थितियों का आकलन किए ऐसे प्रयास में शामिल नहीं होते, जिसके नाकाम रहने से उनकी भी किरकिरी हुई है। विशेषज्ञों को यह जरूर मालूम होगा कि कृत्रिम बारिश के लिए आसमान में बादलों की कैसी मौजूदगी जरूरी होती है। इस ज्ञान का इस्तेमाल ना करने के कारण उन्होंने दिल्लीवासियों की अपेक्षाएं बढ़ाई और उन्हें पूरा करने में नाकाम रहे। वैसे इससे भी बड़ा मुद्दा है प्रदूषण की गंभीर समस्या के बीच दिल्ली सरकार का कृत्रिम वर्षा का 'इन्वेंट' आयोजित करने का नजरिया। दिवाली के आसपास दिल्ली में घने स्मॉग का छाना जैसे एक मौसमी घटना बन गया है। ऐसा क्यों होता है, इस बारे में अनेक अध्ययन हुए, जिनसे अब काफी जानकारी उपलब्ध है। प्रदूषण के कारण व्यवस्थागत हैं। इनकी जड़ें परिवहन संबंधी सरकारी नीतियों और हरित तकनीक लागू करने को लेकर प्रशासनिक लापरवाही में हैं। इन कारणों से प्रदूषक तत्वों का उत्सर्जन लगातार होता रहता है। उनसे बनी सतह पर जब पड़ोसी राज्यों में पराली जलाने से आया धुआं और दिवाली पर पटाखों से निकले हानिकारक तत्व जा बैठते हैं, तो वातावरण पर स्मॉग छा जाता है। स्पष्टतः इस समस्या का फौरी हल तब नहीं हो सकता, जब यह गंभीर रूप में सामने आ जाती है। इसका समाधान नीतिगत बदलाव और निरंतर प्रयासों से ही संभव है। मगर ऐसा करने का मद्दा या नजरिया जब नहीं होता, तब दिखावटी उठाना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है। ऐसे ही कदम के तौर पर इस वर्ष कृत्रिम बारिश कराने की कोशिश की गई। मगर उसकी नाकामी ने दूसरी गहराती समस्याओं को भी उजागर कर दिया है। जाहिर यह हुआ है कि देश में ज्ञान- विज्ञान विरोधी गहराते माहौल के बीच साधारण-से कार्यों को संपन्न करना भी दूभर हो गया है।

पटेल ने बनवाया था सोमनाथ मंदिर!

जवाहरलाल के विरोध के बावजूद नवम्बर 1947 के मध्य में सरदार पटेल ने अपने प्रभास पाटन के दौरे के समय मंदिर का दर्शन किया। और एक सार्वजनिक सभा में घोषणा की कि नए साल के इस शुभ अवसर पर हमने फैसला किया है कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण करना चाहिए। सौराष्ट्र के लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए अपील करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक पवित्र कार्य है, जिसमें सभी को भाग लेना चाहिए। सरदार पटेल (31 अक्टूबर 1875 -15 दिसम्बर 1950) न सिर्फ भारत के स्वतंत्रता सेनानी, अधिवक्ता, राजनेता, देशी रियासतों के एकीकरण के लिए स्मरण किये जाते हैं, बल्कि अत्यंत वैभवशाली होने के कारण इतिहास में कई बार तोड़े व पुनर्निर्मित किये गये गुजरात के सोमनाथ मंदिर के वर्तमान भवन के पुनर्निर्माण का आरंभ स्वतंत्र भारत में करने में अपने महान योगदान के लिए भी याद किये जाते हैं। भारतीय संस्कृति के उत्थान-पतन के इतिहास का प्रतीक गुजरात के सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का आरंभ स्वतंत्रता के पश्चात प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु के लाख विरोध के बाद भी लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने ही करवाया। जिसके कारण पहली दिसम्बर 1955 को भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा इसे राष्ट्र को समर्पित किया जा सका। सोमनाथ मंदिर आज विश्व प्रसिद्ध धार्मिक व पर्यटन स्थल है। चैत्र, भाद्रपद, कार्तिक माह में यहां श्राद्ध करने का विशेष महत्त्व बताये जाने के कारण इन तीन महीनों में यहां श्रद्धालुओं की बड़ी भीड़ लगती है। यहां तीन नदियों हिरण, कपिला और सरस्वती का महासंगम होने के कारण यहां त्रिवेणी स्नान का विशेष महत्त्व है। वर्तमान में सोमनाथ मंदिर की व्यवस्था और संचालन का कार्य सोमनाथ ट्रस्ट के अधीन है। सरकार ने ट्रस्ट को जमीन, बाग-बगीचे देकर आय का प्रबंध किया है। लेकिन पितृगणों के श्राद्ध, नारायण बलि आदि कर्मो के लिए प्रसिद्ध इस मंदिर व ट्रस्ट को श्रद्धालुओं से होने वाली आय पर सरकारी पहरा लगा दिया गया है और इसे सरकारी हस्तगत करने का प्रावधान किया है। प्रधानमन्त्री जवाहर लाल नेहरु को भारतीय संस्कृति, जीवन पद्धति, मंदिर, गाँव, ग्रामीण जिन्दगी से बेहद चिढ़ थी। उनकी इच्छा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की प्राप्त करने की थी। और वे समाजवादी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे। 1947 में भारत विभाजन के पश्चात सरदार पटेल उपप्रधानमंत्री के साथ प्रथम गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री भी बनांये गए थे। देश के 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करने में सरदार पटेल की महानतम देन थी। 5 जुलाई 1947 को एक रियासत विभाग की स्थापना की गई थी तथा देश के रियासतों को एक कर भारत में मिलाने का कठिन कार्य सरदार पटेल को सौंपा गया। और 15 अगस्त 1947 तक केवल तीन रियासतें-कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद छोड़कर अपने अथक प्रयासों से उस लौहपुरुष सरदार पटेल ने सभी रियासतों को भारत में मिला दिया। इन तीन रियासतों में भी जूनागढ़ को 9 नवम्बर 1947 को मिला लिया गया। जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया। 13 नवम्बर को सरदार पटेल ने सोमनाथ के भग्न मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, जो पंडित नेहरू के तीव्र विरोध के पश्चात भी बना। 1948 में हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। भूमण्डल में दक्षिण एशिया में भारतवर्ष के पश्चिमी छोर पर गुजरात नामक राज्य में स्थित अत्यंत प्राचीन व ऐतिहासिक शिव मंदिर सोमनाथ मंदिर को भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग के रूप में माना, जाना व पूजा जाता है। मान्यतानुसार गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल बंदरगाह में स्थित इस मंदिर का निर्माण स्वयं चन्द्रदेव ने किया था। यहीं श्रीकृष्ण ने देहत्याग किया था। मान्यतानुसार श्रीकृष्ण के भालुका तीर्थ पर विश्राम करने के समय शिकारी ने उनके पैर के तलुए में पद्मचिह्न को हिरण की आंख समझकर अनजाने में तीर मार दिया। तब श्रीकृष्ण ने देह त्यागकर यहीं से बैकुंठ गमन किया। इस कारण इस क्षेत्र का और भी महत्त्व बढ़ गया। इस स्थान पर बड़ा ही सुन्दर कृष्ण मन्दिर बना हुआ है। पौराणिक मान्यतानुसार सोम अर्थात चंद्र ने दक्ष प्रजापति की 27 कन्याओं से विवाह किया था। लेकिन उनमें से रोहिणी नामक अपनी पत्नी को

अधिक प्यार व सम्मान दिया करता था। इस अन्याय को होते देख क्रोध में आकर दक्ष ने चन्द्रदेव को शाप दे दिया कि अब से प्रतिदिन तुम्हारा तेज अर्थात कांति, चमक क्षीण होता रहेगा। शाप के कारण हर दूसरे दिन चंद्र का तेज घटने लगा। शाप से विचलित और दुःखी सोम ने भगवान शिव की आराधना शुरू कर दी। अन्ततःशिव प्रसन्न हुए और सोम-चंद्र के शाप का निवारण किया। इसलिए सोम के कष्ट को दूर करने वाले शिव का स्थापन यहां किया गया और सोमनाथ नामकरण किया गया। ऐतिहासिक विवरणियों के अनुसार अति प्राचीन काल से ही दिव्य चमत्कारी व शिव के अत्यंत सिद्ध स्थान के रूप में प्रसिद्ध सोमनाथ महादेव शिवलिंग के स्थान पर सर्वप्रथम एक मंदिर अस्तित्व में था। ईसा पूर्व कई सदियों से उस स्थान पर अवस्थित मंदिर का पुनर्निर्माण द्वितीय बार सातवीं सदी में वल्लभी के मैत्रक राजाओं ने किया। उस स्थान के दर्शन और पूजन से व्यक्ति के कुंडली में विराजित चंद्र नीच होने, चंद्र दोष के दूर होने और जीवन के समस्त कष्टों से मुक्ति मिलने की मान्यता के कारण वहां होने वाली भीड़ और आय को कठिन बनाने के उद्देश्य से आठवीं सदी में सिंध के अरबी गवर्नर जुनायद ने इसे नष्ट करने के लिए अपनी सेना भेजी। गुर्जर प्रतिहार राजा नागभट्ट ने 815 ईस्वी में इसका तीसरी बार पुनर्निर्माण किया। इस मंदिर की महिमा और कीर्ति दूर-दूर तक फैली थी अरब यात्री अल-बरुनी ने अपने यात्रा वृतांत में इसका वर्णन किया, जिससे प्रभावित हो महमूद ग़ज़नवी ने सन 1025 में कुछ 5,000 साथियों के साथ सोमनाथ मंदिर पर हमला किया, उसकी सम्पत्ति लूटी और उसे नष्ट कर दिया। मंदिर के अंदरहाथ जोड़कर पूजा अर्चना कर रहे 50,000 लोग कत्ल कर दिये गए। इसके बाद गुजरात केराजा भीम और मालवा के राजा भोज ने इसका पुनर्निर्माण कराया। सन 1297 में दिल्ली सल्तनत के द्वारा गुजरात पर क़ब्ज़ा किये जाने के समय इसे पांचवीं बार गिराया गया। मुगल बादशाह औरंगजेब ने इसे पुनः 1706 में गिरा दिया। मंदिर का बार-बार खंडन और जीर्णोद्धार होता रहा पर शिवलिंग यथावत रहा। लेकिन सन 1026 में महमूद गजनी के द्वारा खंडित शिवलिंग ही आदि शिवलिंग था। इसके बाद प्रतिष्ठित किए गए शिवलिंग को 1300 में अलाउद्दीन की सेना ने खंडित किया। इसके बाद कई बार मंदिर और शिवलिंग को खंडित किया गया। कहा जाता है कि आगरा के किले में रखे देवद्वार सोमनाथ मंदिर के हैं। महमूद गजनी सन 1026 में लूटपाट के दौरान इन द्वारों को अपने साथ ले गया था। सोमनाथ मंदिर के मूल मंदिर स्थल पर मंदिर ट्रस्ट द्वारा निर्मित नवीन मंदिर स्थापित है। राजा कुमार पाल द्वारा इसी स्थान पर अंतिम मंदिर बनवाया गया था। सौराष्ट्र के मुख्यमन्त्री उच्छंगराय नवलशंकर ढेबर ने 19 अप्रैल 1949 को यहां उत्खनन कराया था। इसके बाद भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने उत्खनन द्वारा प्राप्त ब्रह्मशिला पर शिव का ज्योतिर्लिंग स्थापित किया है। सौराष्ट्र के पूर्व राजा दिग्विजय सिंह ने 8 मई 1950 को मन्दिर की आधारशिला रखी तथा 11 मई 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद ने मंदिर में ज्योतिर्लिंग स्थापित किया। नवीन सोमनाथ मंदिर1962 में पूर्ण निर्मित हो गया। 1970 में जामनगर की राजमाता ने अपने पति की स्मृति में उनके नाम से दिग्विजय द्वार बनवाया। इस द्वार के पास राजमार्ग है और लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा है। सोमनाथ मंदिर निर्माण में पटेल का बड़ा योगदान रहा, क्योंकि उस समय जवाहरलाल नेहरू ने सोमनाथ मन्दिर के पुनर्निर्माण के प्रस्ताव का हिन्दू पुनरुत्थानवाद कहकर विरोध भी किया था। नेहरु की इच्छा का विरोधकर सोमनाथ मंदिर जाना और उसके पुनर्निर्माण की घोषणा करना व बनवाना उस समय कोई आसान कार्य नहीं था। इस संबंध में उस समय नेहरू से हुई बहस को कन्हैयालाल मुंशी ने अपनी पुस्तक पिलग्रिमेज टू फ़्रीडम में दर्ज किया है। वे लिखते हैं- कैबिनेट की बैठक के अंत में जवाहरलाल ने मुझे बुलाकर कहा- मुझे सोमनाथ के पुनरुद्धार के लिए किया जा रहा आपका प्रयास पसंद नहीं आ रहा। यह हिन्दू पुनरुत्थानवाद है। हालांकि मंदिर स्थल की भयंकर दुरवस्था, अपवित्रता, जले हुए और ध्वस्त भग्नावशेषों और बिखरे पत्थरों को देखकर किसी भी भारतीय के अंदर अपमान की अग्निशिखा प्रज्जवलित हो उठना स्वाभाविक था, लेकिन यह जवाहरलाल के लिए कोई मायने नहीं रखती थी। वह इसे हिन्दू पुनरुत्थान कहकर भारतीयों के साथ हुई कृतघ्नता और अपमान को भुला देने का संदेश देने से भी हिचकिचा नहीं रहे थे। जवाहरलाल के विरोध के बावजूद नवम्बर 1947 के मध्य में सरदार पटेल ने अपने प्रभास पाटन के दौरे के समय मंदिर का दर्शन किया। और एक सार्वजनिक सभा में घोषणा की कि नए साल के इस शुभ अवसर पर हमने फैसला किया है कि सोमनाथ का पुनर्निर्माण करना चाहिए। सौराष्ट्र के लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देने के लिए अपील करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक पवित्र कार्य है, जिसमें सभी को भाग लेना चाहिए। सोमनाथ का मंदिर कोई प्राचीन स्मारक नहीं, बल्कि प्रत्येक भारतीय के हृदय में स्थित पूजा स्थल था जिसका पुनर्निर्माण करने के लिए अखिल राष्ट्र प्रतिबद्ध था।

-अशोक 'प्रवृद्ध'

हार न मानने वाली की एक प्रेरक कहानी!

ऐसी कहानियाँ हमें याद दिलाती हैं कि पुलिस की वर्दी केवल कठोरता का प्रतीक नहीं, बल्कि भीतर छिपी संवेदनशीलता और शक्ति का भी प्रतिनिधित्व करती है। जब एक गर्भवती महिला अधिकारी वेटलिफ्टिंग में मेडल जीतती है, तो यह केवल एक खेलीय सफलता नहीं, बल्कि नारी सम्मान और मानव आत्मबल की पराकाष्ठा है। समाज को इस उदाहरण से सीख लेनी चाहिए, अगर मन में दृढ़ विश्वास हो, तो कोई परिस्थिति बाधा नहीं बन सकती। कभी समाज ने मान रखा था कि गर्भवती महिलाएँ सिर्फ विश्राम और देखभाल के लिए होती हैं। लेकिन समय ने दिखा दिया कि अगर इच्छाशक्ति दृढ़ हो, तो स्त्री के सामने कोई प्रतिबंध टिक नहीं सकता। दिल्ली पुलिस की एक बहादुर महिला कॉन्स्टेबल ने इस सत्य को अपनी मेहनत, समर्पण और जज़्बे से साकार कर दिखाया। गर्भवती होने के बावजूद उन्होंने वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता में भाग लिया, और न सिर्फ भाग लिया बल्कि पदक भी जीता। यह सिर्फ खेल की जीत नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक बंधनों पर विजय का संदेश भी है। ड्यूटी पर रहना, तनाव भरे हालात से निपटना और शारीरिक रूप से मजबूत रहना। ऐसे में किसी महिला के लिए, जो राष्ट्रीय स्तर की वेटलिफ्टिंग प्रतियोगिता जीत सके,

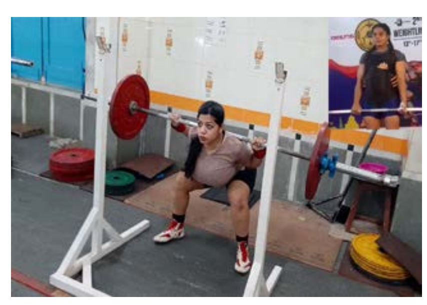

असाधारण बात है। लेकिन इस महिला कॉन्स्टेबल ने यह कर दिखाया। दिल्ली पुलिस की कांस्टेबल सोनिका यादव की प्रेरणादायक कहानी साहित्य में एक मिसाल है। सात महीने की गर्भवती कलस्टर चैंपियनशिप में 145 किलोग्राम वजन उठाकर कांस्य पदक जीता। यह उपलब्धि न केवल उनकी शारीरिक ताकत का प्रदर्शन है, बल्कि महिलाओं के साहस, लगन और सीमाओं को पार करने की क्षमता की नई परिभाषा भी प्रस्तुत करती है। उनकी यात्रा आसान नहीं थी। जब उन्हें पता चला कि वे माँ बनने वाली हैं, बहुतों ने सलाह दी कि खेल से दूरी बना लें, पूरी तरह विश्राम करें। लेकिन उन्होंने डॉक्टरों की निगरानी में सीमाओं को समझते हुए प्रशिक्षण जारी रखा। यह उनके ड्यूटी के साथ सुबह की एक्सरसाइज़, नियंत्रित आहार और नियमित चिकित्सकीय जांच शामिल थी। कई लोग सोच सकते हैं कि गर्भावस्था में खेलना खतरनाक हो सकता है। लेकिन यह समझना आवश्यक है कि हर गर्भावस्था अलग होती है और सही चिकित्सकीय मार्गदर्शन में हल्के-फुल्के शारीरिक व्यायाम न केवल सुरक्षित होते हैं, बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी भी। सोनिका ने इसे एक मिशन की तरह लिया — वे यह दिखाना चाहती थीं कि मातृत्व और कर्तव्य के बीच कोई विरोध नहीं है। जब प्रतियोगिता का दिन आया, तो मंच पर उतरते समय दर्शकों ने देखा कि वह गर्भवती हैं। लेकिन उनके चेहरे पर किसी प्रकार का भय या हिचक नहीं था, बस आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय। उन्होंने जब वजन उठाया, तो पूरा हॉल तालियों से गूंज उठा। उनके प्रदर्शन ने यह साबित किया कि स्त्रियाँ सिर्फ परिवार का नहीं, बल्कि समाज की ऊर्जा और प्रेरणा का भी केंद्र हैं। अंततः उन्होंने मेडल जीता, लेकिन उससे भी बड़ा पुरस्कार था लोगों के दिलों में मिली प्रशंसा और आदर। सोनिका की इस उपलब्धि ने यह सन्देश दिया कि समाज में व्याप्त पूर्वाग्रहों और पारंपरिक धारणाओं को तोड़ा जा सकता है। वह न केवल एक पुलिस अधिकारी के रूप में अपनी जिम्मेदारियां निभा रही हैं, बल्कि खेलों के क्षेत्र में भी उज्जवल उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं। दिल्ली पुलिस ने भी इस उपलब्धि पर गर्व व्यक्त किया। उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने कहा कि ऐसी कहानियाँ प्रेरणा देती हैं कि फिटनेस और पेशेवर जिम्मेदारी एक साथ निभाई जा सकती हैं। पुलिस विभाग में अब कई महिला अधिकारी फिटनेस कार्यक्रमों से जुड़ रही हैं और अपने रोल मॉडल के रूप में कॉन्स्टेबल सोनिका को देख रही हैं। समाज के लिए यह कहानी एक विशेष संदेश लाती है। भारत में अब भी अनेक महिलाएँ ऐसे माहौल में काम करती हैं जहाँ गर्भावस्था को कमजोरी या 'आराम का दौर' समझा जाता है। यह सोच बदलनी होगी। सही चिकित्सकीय सलाह और समर्थन से महिलाएँ अपने पेशेवर जीवन को जारी रख सकती हैं। साथ ही, संस्थानों को भी यह सुनिश्चित करना होगा कि गर्भवती कर्मियों को सुविधाएँ, सम्मान और समान अवसर मिलें। हम यह भी नहीं भूल सकते कि इस कहानी के पीछे परिवार का सहयोग कितना महत्वपूर्ण रहा। उनके पति और ससुराल वालों ने न सिर्फ उनका हौसला बढ़ाया, बल्कि घरेलू जिम्मेदारियाँ बांटकर उन्हें सफल होने में मदद की। यही वह सामाजिक साझेदारी है जो परिवर्तन की असली नींव होती है।

जब ख़बरें 'नई' लगना बंद कर दे!

डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वे तीस साल बाद फिर से परमाणु परीक्षण शुरू करेंगे। उधर पाकिस्तान ने धमकी दी है कि तालिबान को फिर से गुफ़ाओं में धकेलने के लिए वह अपने जखीरे का "एक अंश" खोल देगा। ग़ाज़ा में एक और रात रॉकेटों के आसमान तले गुज़री। इज़राइल की ताज़ा हवाई बमबारी में सौ से अधिक लोग मारे गए, जबकि युद्धविराम फिर लड़खड़ा रहा है। हरिकेन मेलिसा ने कैरेबियन को सपाट कर दिया। और अपने घर में, राजधानी दिल्ली की हवा घुटन भरे धूसर रंग में बदलती जा रही है। बिहार का चुनावी तापमान धुंध के साथ तालमेल में अलग ऊपर चढ़ रहा है। इन दिनों एक अजीब-सी घबराहट आ बैठती है, हर सुबह लैपटॉप खोलते ही। और क्या लिखूँ जो पहले किसी शोक-स्वर में न कहा जा चुका हो? ऐसी कौन-सी नई बात लिखूँ जो लोकतंत्र, मर्यादा और उम्मीद के एक और शोकपत्र जैसी न लगे? मैं साइट्स, वायर कॉपियाँ खंगालती हूँ—ऐसी कहानी की तलाश में जो अर्थपूर्ण हो पर निराशाजनक नहीं, तात्कालिक हो पर उन्मत्त नहीं। कुछ जो किसी अंत की गंध न दे। पर अर्थ ही दुर्लभ हो गया है। ख़बर अब खिड़की से ज़्यादा आईने जैसी लगती है—दोहराव की मार से दरकता हुआ आईना। यह थकान सिर्फ़ निजी नहीं, संरचनात्मक है। दस साल पुरानी बासी कहानियाँ मैगज़ीन दफ़्तरों में फिर से गर्म की जा रही हैं और "नए दौर" की ताज़ा राय बनकर परोसी जा रही हैं। टीवी स्टूडियो और अख़बारों के ब्रांड अपने-अपने पैनल, अवॉर्ड और फ़ोरम रचकर ख़ुद ही "ख़बर" बनाने लगे हैं—जहाँ पत्रकारिता और मार्केटिंग की रेखा धुँधली पड़ जाती है। गलती सिर्फ़ सत्ता या उद्योग की नहीं बल्कि पत्रकार भी दोषी हैं। कुछ समय पहले एक पत्रकार मिले जो पूरी ईमानदारी से सरकार की उस नीति का बचाव कर रहे थे जिसमें पत्रकारों का नेताओं के साथ यात्रा करना ख़त्म कर दिया गया है। उनका तर्क था—अगर राज्य के ख़र्च पर कोई पत्रकार आधिकारिक दौरे पर जाए और बाद में आलोचनात्मक लिख दे तो नेता को "धोखा" महसूस होना स्वाभाविक है। तर्क सादा था—और सिहराने वाला। मतलब सरकार पैसा दे तो पत्रकार "ठीक बर्ताव" करे। कौन-सा तर्क दिया जाए इसके आगे? यह भूलते हुए कि वह पैसा जनता का है—आपका, मेरा, सबका। और यह भी कि पत्रकार का काम वही पूछना

करने के लिए करते हैं। जबकि कभी पत्रकारिता आईना थी। आज की पत्रकारिता अहसान और भय के भार तले धीमे-धीमे झुकती है। चुप्पी को "बैलेंस" कहा जाता है; सच बोलना "ऐक्टिविज़्म" ठहराया जाता है। बीट्स, इको-चैम्बर्स बन गई हैं; प्रेस कॉन्फ़्रेंस—प्रदर्शन। सवाल करने की वृत्ति, समूह में शामिल होने की प्रवृत्ति से बदल दी गई है। क्योंकि आज के माहौल में जो ख़बर सचमुच ख़बर है—बिना फिल्टर, असुविधाजनक, अनस्क्रिप्टेड—अक्सर

है जिसे सत्ता छिपाना चाहती है; सत्ता की जय-जयकार दोहराना नहीं। कभी रिपोर्टिंग का मतलब था साक्षी होना। शोर आने से पहले सच को शांत, सधे ढंग से दर्ज करना। अब शोर पहले आता है, कहानी पीछे-पीछे हाँफती है—अगर पहुँच पाए तो। हम अब यह नहीं पूछते कि क्या महत्त्वपूर्ण है; पूछते हैं, क्या क्लिक होगा? यह गिरावट सिर्फ़ संस्थानों से नहीं, लेखन तक उतर आया है। विचार लेख—जो कभी विचार जगाने के लिए होते थे—अब प्रदर्शन बनते जा रहे हैं; प्रासंगिक लगने की दौड़, चिंतन की जगह लेती जा रही है। संपादकीय पन्ना—जो कभी अख़बार का विवेक-स्तंभ था—अब किसी और कंटेंट फ़ीड की तरह स्क्रोल होता है। हम मनाने के लिए नहीं बहस करते बल्कि ट्रेंड

छुई ही नहीं जाती। नस तक पहुँचना जोखिम है; शोर को कवर करना सुरक्षित। जब सत्ता ही सुर्ख़ियाँ फंड करे तो "निष्पक्षता" भी प्रतिरोध बन जाती है और सच तो ऐसी देयता, जिस पर टैक्स भी लग सकता है। मुझे लगा था कोविड सबसे बुरा वक़्त था। जब मौत ही एकमात्र ख़बर थी। घड़ी जैसे अंत से ठीक पहले रुक गई थी। पर उसके बाद जो आया, वह और अजीब था—सुर्ख़ियों में खुलती स्लो-मोशन प्रलय। बाढ़ें, युद्ध, अकाल, तख़्तापलट—संकट की भाषा और धाराप्रवाह, और स्थायी हो गई। महामारी ने समय को स्थिर किया; उसके बाद का दौर हमें रिप्ले में कैद कर गया—वही शोक, नए चेहरे। और जब दुनिया इस अंतहीन रील में घूम रही है, मैं ख़ुद को लिखते हुए पाती हूँ। उस अर्थ की खोज में जो एक अर्थहीन करने पर आमादा समय से बचा सके। राजनीति रंगमंच लगती है, सत्ता—प्रदर्शन। नेता पॉपुलिस्ट बनते हैं, पॉपुलिस्ट पैग़ंबर; हर प्रेस कॉन्फ़्रेंस परफ़ॉर्मेंस आर्ट। कई दिन तो समझ नहीं आता कि मैं इतिहास कवर कर रही हूँ या पैरोडी। एक उपभोक्ता के रूप में ख़बर मुझे तोड़ देती है। पत्रकार के रूप में मैं और भी थक जाती हूँ। फिर उस थकान को रोज़ शब्दों में अनुवाद करने को विवश। उलझन में, एक शाम कॉफ़ी पर मैंने एक दोस्त से कहा—"सोचती हूँ, कुछ हल्की-फुल्की, नर्म-सी किताबें पढ़ना शुरू करूँ—जेन आयर, लिटिल वीमेन, यहाँ तक कि चिकन सूप फ़ॉर द सोल। शायद कुछ जापानी कहानियाँ—ख़ामोश कैफ़े और मामूली दयालुताओं पर।" वह मुझे अजीब नज़र से देखने लगी। पर मैं मज़ाक नहीं कर रही थी। ज़रूरत है—हल्केपन की, कोमलता की; ऐसी कहानियों की जिनमें न पॉलिसी ब्रीफ हो, न हताहतों की गिनती। क्योंकि युद्धों, पागलों, विदूषकों, जलवायु पतन, और तीस की उम्र में शुगर–दिल की घबराहट के बीच मैंने शायद साधारण आनंद का चेहरा ही भूल दिया है। और मैं अकेली नहीं। बहुत-से लोग चुपचाप ख़बरों से ट्यून आउट हो रहे हैं—उदासीनता से नहीं, थकान से—खून बहाती सुर्ख़ियों, चीख़ते डिबेट, और अंतिम-सी लगती सच्चाइयों से थककर। वे सांस लेना चाहते हैं—बुलेटिनों के बीच नहीं, बस सांस लेना चाहते हैं। मेरे लिए, चाहे मैं जेन आयर फिर से पढ़ना शुरू कर दूँ, दिनचर्या तो बनी रहेगी ही। लैपटॉप खोलना, वायर पढ़ना, शोर छानना—इस उम्मीद में कि कोई ऐसी कहानी मिल जाए जिसमें धुएँ और मलबे की नहीं, रोशनी और झिलमिल की गंध हो। या शायद वे नर्म, हास्य-भरी किताबें मुझे उन विदूषक–पॉपुलिस्ट–पैग़ंबरों को थोड़ी और हँसी से देखने की क्षमता दे दें—मेरे लिखने में हल्कापन, आपके पढ़ने में राहत। और शायद पत्रकारिता अब इसी ओर जा रही है—ब्रेकिंग की दीवानगी नहीं, छोटी कृपाओं की तलाशः कोई टुकड़ा, कोई चमक, कोई याद दिलाहट कि अभी कुछ बचा है। क्योंकि अगर दुनिया पैरोडी बनने पर आमादा है, तो शायद आख़िर में ईमानदारी यही है—हल्की, समझदार हँसी के साथ लिखते रहना।

-श्रुति व्यास

Meteor, Astra, R-37M... चीन-पाकिस्तानी फाइटर जेट का आसमान में कब्र बनाने की तैयारी, वायुसेना का क्या है 'किलर प्लान

एजेंसी नई दिल्ली

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय S-400 एयर डिफेंस सिस्टम ने 314 किलोमीटर की दूरी से पाकिस्तानी अवाक्स एयरक्राफ्ट को मार गिराया था। भारत ने ऐसा करते वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम किया है। इसके अलावा ऑपरेशन सिंदूर के दौरान एयर टू एयर मिसाइलों का जबरदस्त रोल देखने को मिला। चीन ने पाकिस्तान को PL-15 एयर टू एयर मिसाइल दिया था। ऐसी रिपोर्ट है कि पाकिस्तान ने 10 PL-15 एयर टू एयर मिसाइल का इस्तेमाल किया था, जिनमें से 9 को भारत ने इंटरसेप्ट कर लिया था, जिनमें से एक बिना खराब हुए जमीन पर गिरा। वहीं, भारत खुद का एयर टू एयर मिसाइल Astra-3 बना रहा है, जिसका नाम गांडीव रखा गया है। इसकी क्षमता PL-15 एयर टू एयर मिसाइल से काफी ज्यादा है। फिलहाल ये डेवलपमेंट फेज में है। भविष्य में लड़ाई और भी ज्यादा बदलने वाली हैं और एयर टू एयर मिसाइलों के साथ साथ जैमिंग और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर का काफी ज्यादा इस्तेमाल होने वाला है। खासकर चीन और पाकिस्तान जैसी परमाणु शक्तियों से घिरे भारत के लिए लंबी दूरी की मिसाइल क्षमता बढ़ाना रणनीतिक जरूरत बन गई है। इसीलिए भारत अब अरबों डॉलर के निवेश से अपने लड़ाकू बेड़े को नई पीढ़ी की लॉन्ग-रेंज एयर-टू-एयर मिसाइलों से लैस कर रहा है। समाचार एजेंसी ANI ने अज्ञात सूत्रों के हवाले से बताया है कि भारत, यूरोपीय Meteor मिसाइलों की एक बड़ी खेप खरीदने की तैयारी में है, जिसकी कीमत करीब 1,500 करोड़ बताई जा रही है। रक्षा मंत्रालय में यह प्रस्ताव अंतिम चरण में है और जल्द मंजूरी मिलने की उम्मीद है। आपको बता दें कि यूरोपीय कंपनी MBDA ने Meteor मिसाइल को डेवलप किया है और ये दुनिया की सबसे एडवांस BVR मिसाइलों में से एक मानी जाती है। इसकी मारक क्षमता 200 किलोमीटर तक है। Meteor मिसाइल पहले से ही भारतीय वायुसेना के 36 राफेल लड़ाकू विमानों में लगी है और अब इसे नौसेना के लिए ऑर्डर किए गए 26 राफेल मरीन जेट्स में भी लगाया जाएगा। Meteor में रैमजेट इंजन है जो उसे टारगेट को हिट करने तक हाई स्पीड बनाए रखने की क्षमता देता है। साथ ही उसका दो-तरफ़ा डेटा लिंक पायलट को फ्लाइट के दौरान ही लक्ष्य बदलने की अनुमति देता है। ये मिसाइल दुश्मनों के विमानों के लिए 'नो एस्केप जोन' बनाता है, जिससे 'फर्स्ट शॉट एंड फर्स्ट किल' की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। भारतीय वायुसेना के रिटायर्ड पायलट विजयेन्द्र के ठाकुर ने पिछले दिनों कहा था कि भारत को हर हाल में रूसी R-37M एयर टू एयर मिसाइल खरीदना चाहिए। उन्होंने हैरानी जताई थी कि भारत ने ऐसा पहले क्यों नहीं किया, ये हैरान करने वाली बात है। रूस ने Aero India 2025 में भारत को अपनी सुपरसोनिक R-37M (RVV-BD) मिसाइल की पेशकश की थी, जिसकी रेंज 200 किलोमीटर से ज्यादा है और यह AWACS, टैंकर और बमवर्षक विमानों जैसे हाई-वैल्यू टारगेट्स को मार गिराने के लिए डिजाइन की गई है। रूस का दावा है कि इस मिसाइल की रेंज 300 किलोमीटर तक है। रूस और भारत

इन मिसाइलों के संयुक्त उत्पादन पर भी चर्चा कर रहे हैं। इसके अलावा भारत अपने स्वदेशी मिसाइल प्रोग्राम Astra पर भी पूरी ताकत से काम कर रहा है। Astra Mk-1 पहले से ही Su-30MKI और LCA Tejas में ऑपरेशनल है, जिसकी रेंज 100 किलोमीटर से ज्यादा है। अब DRDO ने Astra Mk-2 को डेवलप करना तेजी से शुरू कर दिया है, जिसकी रेंज 200 किलोमीटर से ज्यादा है। रिपोर्ट के मुताबित, भारतीय वायुसेना में Astra Mk-2 की 700 से ज्यादा मिसाइलें सौंपी जाएंगी। लेकिन दुश्मन जिस मिसाइल से सबसे ज्यादा डरेंगे, वो Astra Mk-3 है, जिसे गांडीव नाम दिया गया है। इस मिसाइल की रेंज 340 किलोमीटर से ज्यादा है। इसे दुनिया की सबसे खतरनाक एयर टू एयर मिसाइल माना जा रहा है। आपको बता दें कि भारत का मकसद चीन और पाकिस्तान के मुकाबले आगे निकलने की है। पाकिस्तान के पास चीनी PL-15E मिसाइल है जिसकी रेंज 145 किलोमीटर तक है, जबकि चीन के पास PL-15, PL-17 और PL-21 जैसी मिसाइलें हैं, जिनकी रेंज 200-300 किलोमीटर के बीच है। अलग अलग वैरिएंट की रेंज अलग अलग है। ऐसे में Meteor, Astra Mk-3 और R-37M जैसी एयर टू एयर मिसाइलें भारत की क्षमता में जबरदस्त इजाफा कर सकते हैं। डिफेंस एक्सपर्ट्स का मानना है कि जब ये सभी मिसाइलें पूरी तरह से तैनात हो जाएंगी, तो भारतीय वायुसेना के पास एशिया में सबसे एडवांस एयर-टू-एयर मिसाइल सिस्टम होगा। इससे ना सिर्फ भारत की स्ट्रैटेजिक डिटरेंस कैपेबिलिटी काफी बढ़ जाएगी, बल्कि भारत को नेटवर्क-सेंट्रिक, हाई-टेक वायु क्षमता भी मिल जाएगा।

ईरान के लिए हम खुश लेकिन... चाबहार पोर्ट पर भारत को मिली छूट तो चौकन्ना हुआ पाकिस्तान, दी गीदड़भभकी

एजेंसी इस्लामाबाद

ईरान के चाबहार बंदरगाह पर अमेरिकी प्रतिबंधों से भारत को छह महीने की छूट मिल गई है। इससे भारत के लिए अफगानिस्तान और आसपास पहुंचने में आसानी होगी। दूसरी ओर पाकिस्तान की फिक्र इस छूट ने बढ़ा दी है। अमेरिका की ओर से भारत को छूट देने के ऐलान के बाद इस पर पाकिस्तान का बयान सामने आया है। पाकिस्तान ने शुक्रवार को ईरान के चाबहार पोर्ट का इस्तेमाल बलूचिस्तान प्रांत में हिंसा फैलाने के लिए होने की संभावना पर चिंता जताई है। पाकिस्तान ने भारत को चाबहार पर अमेरिका से मिली छूट का इस्तेमाल अशांत बलूचिस्तान प्रांत में सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा ना देने के लिए करने की गीदड़भभकी दी है। चाबहार बंदरगाह पाकिस्तान से होकर अफगानिस्तान जाने वाला प्रमुख व्यापार मार्ग है। पाकिस्तान को लगता है कि इससे अफगानिस्तान सीमा के क्षेत्रों में भारत की पकड़ बढ़ जाएगी। अमेरिका की ओर से छूट के ऐलान के बाद पाकिस्तान के विदेश कार्यालय के प्रवक्ता ने कहा कि इस्लामाबाद ने इस घटनाक्रम पर ध्यान दिया है। उन्होंने कहा कि हम ऐसे किसी भी फैसले का स्वागत करते हैं, जो ईरान में आर्थिक विकास और व्यवसाय की संभावनाओं में सुधार लाए। यह छूट देना वॉशिंगटन का संप्रभु निर्णय है क्योंकि वह मूल रूप से प्रतिबंध लगाने वाला देश है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) का जिक्र करते हुए कहा, 'हम भारत को आगाह करते हैं कि वह इस रास्ते (चाबहार) का दुरुपयोग आतंकवाद और तोड़फोड़ को बढ़ावा देने के लिए ना करे। भारत ने अतीत में भी इस क्षेत्र से पाकिस्तान में सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा दिया है। उसे भविष्य में ऐसा करने से बचना चाहिए।' पाकिस्तान लंबे समय से भारत और अफगानिस्तान पर बलूचिस्तान और अफगान सीमा से लगे अपने क्षेत्रों में हिंसा फैलाने का आरोप लगाता रहा है। हालांकि नई दिल्ली ने इस आरोप का सिरे से खंडन किया है। भारत और अफगानिस्तान की ओर से कई दफा ये साफ किया जा चुका है कि पाकिस्तान के किसी भी प्रांत में हिंसा में उनका कोई किरदार नहीं है। भारत ने पिछले साल चाबहार बंदरगाह के विकास और संचालन के लिए ईरान के साथ 10 साल का अनुबंध किया था। भारत ने काबुल में दूतावास खोलकर तालिबान के साथ संबंधों को भी मजबूत किया है। यह दूतावास 2021 में तालिबान के सत्ता कब्जाने के बाद बंद कर दिया गया था। हालिया महीनों में फिर से भारत-अफगान संबंध सुधर रहे हैं।

भारत के 'त्रिशूल एक्सरसाइज' शुरू होते ही पाकिस्तान में हड़कंप, सर क्रीक के पास पाकिस्तान नेवी ने जारी किया नया NOTAM, हमले का डर

एजेंसी इस्लामाबाद

भारत के पश्चिमी तट के पास रणनीतिक हलचलें काफी तेज हो गई हैं। पाकिस्तान को भारतीय हमले का खौफ सता रहा है। भारत के तीनों सेनाओं के संयुक्त युद्धाभ्यास 'त्रिशूल' के शुरू होते ही पाकिस्तान में बेचैनी की लहरे हैं। जिसके बाद पाकिस्तान ने अरब सागर में नया नेवल नेविगेशनल अलर्ट जारी किया है। इस चेतावनी के तहत पाकिस्तानी नौसेना 2 से 5 नवंबर के बीच सर क्रीक क्षेत्र के नजदीक लाइव फायरिंग और नौसैनिक अभ्यास करेगी। आपको बता दें कि यह वही इलाका है, जहां भारत और पाकिस्तान के बीच समुद्री सीमा को लेकर दशकों से विवाद चला आ रहा है। पाकिस्तान की तरफ से जारी नेविगेशनल अलर्ट में 135 किलोमीटर लंबा समुद्री क्षेत्र शामिल किया गया है। इस दौरान इस क्षेत्र से सभी वाणिज्यिक और नागरिक जहाजों को दूर रहने की सलाह दी गई है। पाकिस्तान ने अरब सागर में लाइव नौसैनिक फायरिंग अभ्यास के लिए चेतावनी (NAVAREA) जारी की है, जो भारत के चल रहे त्रिशूल-सेवा त्रि-सेना अभ्यास के शुरू होने बाद उसके डर के माहौल को दिखाती है। न्यूज 18 की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तानी नौसेना 2 नवंबर से 5 नवंबर के बीच विवादित सर क्रीक क्षेत्र और भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) के निकट के जलक्षेत्र में लाइव फायरिंग और नौसैनिक युद्धाभ्यास करेगी। यह चेतावनी 135 किलोमीटर के नौवहन क्षेत्र को कवर करती है। रक्षा सूत्रों के हवाले से न्यूज-18 ने कहा है कि इस अभ्यास के दौरान मिसाइल

परीक्षण और पनडुब्बी से छोड़े जाने वाले टॉरपीडो के ट्रायल भी किए जा सकते हैं। पाकिस्तान ने पिछले कुछ हफ्तों में लगातार कई NOTAMs और NAVAREA चेतावनियां जारी की हैं, जिससे संकेत मिलता है कि इस क्षेत्र में उसकी सैन्य गतिविधियां असामान्य रूप से बढ़ गई हैं। एक नवंबर से 30 नवंब के बाच पाकिस्तान ने भी कई हवाई और समुद्री क्षेत्रों को प्रतिबंधित कर दिया है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि पाकिस्तान को आशंका है कि भारत अचानकर हमला कर सकता है। हालांकि नवभारत टाइम्स से बात करते हुए पूर्व एयरफोर्स पायलट विजयेन्द्र के ठाकुर ने ऐसी बातों से इनकार किया है। उन्होंने कहा कि भारत की तरफ से जारी सभी नोटम के "शुरू होने का समय भारतीय समयानुसार शाम 7:30 बजे के आसपास है। NOTAMS पूर्णिमा से लेकर अमावस्या के आसपास बारी-बारी से आयोजित होते हैं। अगर मैं अनुमान लगाऊं तो कहूंगा कि भारतीय वायुसेना कई अभ्यास कर रही है। खराब मौसम को देखते हुए ज्यादा से ज्यादा अभ्यास रात में किए जा रहे हैं।" वहीं इस सवाल पर कि क्या भारत के नोटम का सर क्रीक के आसपास के इलाकों से कोई लेनादेना है तो उन्होंने कहा कि, "मुझे नहीं लगता कि इनका आपस में कोई संबंध है। अरब सागर में चल रहा अभ्यास एक त्रि-सेवा अभ्यास है। पूर्व के लिए NOTAMS संभवतः भारतीय वायुसेना के अलग-अलग पूर्णिमा की रात की परिस्थितियों में प्रशिक्षण के लिए एकमात्र अभ्यास हैं।" आपको बता दें कि भारत की तरफ से जारी 'त्रिशूल' युद्धाभ्यास को तीनों सेनाओं के बीच तालमेल और कॉर्डिनेशन बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है। रक्षा अधिकारियों के मुताबिक, ये एक बहुत बड़ा युद्धाभ्यास है। इसमें सेना, नौसेना और वायुसेना के बीच आपसी कॉर्डिनेशन और इंटीग्रेशन का टेस्ट किया जा रहा है। अभ्यास के दौरान समुद्र से लेकर रेगिस्तान और जमीनी इलाकों में आक्रामक युद्धाभ्यास किए जाएंगे और कई तरह के ऑपरेशन शक्ति की जांच की जाएगी। इस दौरान वायुसेना अपने राफेल, Su-30MKI, RPAs, UAVs, IL-78 रीफ्यूलर्स और AEW&C सिस्टम्स को तैनात कर रही है, जबकि नौसेना के अग्रिम पंक्ति के युद्धपोत और मिसाइल जहाज समुद्री अभ्यास में भाग ले रहे हैं। वहीं, थलसेना ने करीब 25,000 जवानों को तैनात किया है, जिन्हें मुख्य युद्धक टैंक, तोपखाने, सशस्त्र हेलीकॉप्टर, और कई स्वदेशी मिसाइल प्रणालियों से लैस किया गया है।

अमेरिका-भारत के 10 वर्षीय रक्षा समझौते से टेंशन में आया पाकिस्तान, मुनीर-शहबाज को सताया बड़ा डर

एजेंसी इस्लामाबाद

भारत और अमेरिका ने शुक्रवार को 10 वर्ष के एक रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। भारत और अमेरिका के समझौते ने पाकिस्तान का ध्यान खींचा है। पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय का कहना है कि इस पर कोई स्पष्ट टिप्पणी नहीं की जा सकती है। फिलहाल उनकी ओर से इस समय भारत और अमेरिका के बीच हुए नए 10-वर्षीय रक्षा समझौते का मूल्यांकन किया जा रहा है। पाकिस्तान की इस समझौते से दक्षिण एशिया के रणनीतिक संतुलन और सुरक्षा गतिशीलता पर संभावित प्रभाव को लेकर चिंताएं हैं। भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और अमेरिकी रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने शुक्रवार को रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता ऐसे समय हुआ है, जब डोनाल्ड ट्रंप के भारत पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने के चलते दोनों देशों में तनाव है। इस समझौते से दोनों देशों के रिश्ते सुधरने की उम्मीद है। हेगसेथ ने कहा कि समझौता क्षेत्रीय स्थिरता की आधारशिला है। इससे भारत-अमेरिका खुफिया और तकनीकी सहयोग बढ़ेगा। पाकिस्तान और भारत के बीच इस साल मई में चार दिन का भीषण सैन्य संघर्ष देखने को मिला था। चार दिवसीय संघर्ष के बाद दोनों पक्षों ने 10 मई को युद्धविराम की घोषणा की थी। हालांकि लड़ाई रुकने के बाद भी दोनों पक्षों में तनाव बरकरार है। ऐसे में पाकिस्तान की नजर भारत-अमेरिका के रक्षा समझौते पर टिक गई है। पाकिस्तानी विदेश कार्यालय के प्रवक्ता ताहिर अंद्राबी ने शुक्रवार को अपने बयान में कहा, 'भारत-अमेरिका रक्षा समझौता एक बहुत ही हालिया घटनाक्रम है। हम इस समझौते का मूल्यांकन कर रहे हैं। खासतौर से दक्षिण एशिया में शांति, सुरक्षा और स्थिरता पर इसके प्रभाव के संदर्भ में हम इस नए समझौते को देख रहे हैं। अमेरिका-भारत समझौता 2015 में हुए एक ऐसे ही समझौते का विस्तार है। इस समझौते में संयुक्त प्रौद्योगिकी विकास, रक्षा व्यापार और सैन्य आदान-प्रदान शामिल थे। 10 साल पहले अमेरिका ने भारत को प्रमुख रक्षा साझेदार घोषित किया था। इससे महत्वपूर्ण सैन्य उपकरणों और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान का रास्ता साफ हुआ था। रक्षा मंत्रालय ने कहा है कि भारत और अमेरिका एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुनिश्चित करने के लिए साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसमें कहा गया है कि 2025 की रूपरेखा अगले 10 वर्षों में साझेदारी को मजबूत करने के लिए नया अध्याय है। इसका उद्देश्य रक्षा सहयोग को गहरा करने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण और नीति दिशा प्रदान करना है।

अजरबैजान का दुश्मन भारत से खरीद रहा Su-30MKI फाइटर जेट, पाकिस्तानी JF-17 का करेगा मुकाबला, आखिरी चरण में बातचीत

एजेंसी येरेवन

पाकिस्तान और अजरबैजान के गठजोड़ को काउंटर करने के लिए आर्मेनिया, कथित तौर पर भारत से Su-30MKI लड़ाकू विमान खरीद रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, आर्मेनिया और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) के बीच Su-30MKI पर हो रही बातचीत आखिरी राउंड में पहुंच गई है। रिपोर्ट के मुताबिक यह सौदा 2.5 से 3 अरब डॉलर के बीच का बताया जा रहा है और अगर सौदा तय हो जाता है तो यह आर्मेनिया का अब तक का सबसे बड़ा रक्षा आयात होगा। आर्मेनिया भारतीय फाइटर जेट उस वक्त खरीदने जा रहा है, जब पाकिस्तान ने अजरबैजान को 40 JF-17 लड़ाकू विमानों की डिलीवरी शुरू कर दी है। अजरबैजान, पाकिस्तान से 40 JF-17 खरीद रहा है और कई रिपोर्ट्स में कहा गया है कि 3 JF-17 की डिलीवरी अजरबैजान को की जा चुकी है। भारत और आर्मेनिया के बीच पिछले कुछ वर्षों में रक्षा सहयोग लगातार बढ़ा है। आर्मेनिया पहले से भारतीय पिनाका मल्टी-बारेल रॉकेट लॉन्चर सिस्टम इस्तेमाल करता आ रहा है। इसके अलावा आर्मेनिया भारत से रडार और गोला-बारूद भी खरीदता है। अब अगल Su-30MKI का सौदा होता है, तो इससे यह साझेदारी एक नए स्तर पर पहुंचेगी। समझौते के तहत HAL 2027 तक डिलीवरी शुरू करने की तैयारी में है। इन फाइटर जेट्स को भारतीय तकनीक के साथ कस्टमाइज किया

जाएगा और इनमें स्वदेशी उत्तम AESA रडार, Astra Beyond Visual Range (BVR) मिसाइलें और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर सिस्टम्स लगाए जाएंगे। इन क्षमताओं के साथ आर्मेनिया काफी आसानी से पाकिस्तानी JF-17C को मात दे सकता है। Su-30MKI भारतीय वायुसेना की रीढ़ मानी जाती है। 2002 में शामिल हुए इस रूसी मूल के विमान को भारत अब पूरी तरह से स्वदेशी टेक्नोलॉजी से रंग चुका है। ये फाइटर जेट AL-31FP थ्रस्ट-वेक्टरिंग इंजन से लैस है, जो इसे सुपर्मैन्युवरेबिलिटी प्रदान करता है और यह आठ टन से ज्यादा हथियार ले जा सकता है। इसके अलावा एक और बड़ी खासियत ये है कि ब्रह्मोस मिसाइल को भारत ने Su-30MKI में लगाने के लिए ही डिजाइन किया हुआ है। ऐसे में आर्मेनिया भविष्य में ब्रह्मोस मिसाइल भी भारत से खरीद सकता है, जिसने पाकिस्तान के 11 एयरबेस पर तबाही मचा दी थी। आर्मेनिया पहला देश होगा जो भारतीय एडवांस फाइटर जेट खरीदेगा।

भारतीय सेना के 'त्रिशूल' से डरा हाफिज सईद! लाहौर में होने वाला विशाल सम्मेलन टला, बाहरी खतरे का दिया हवाला

एजेंसी इस्लामाबाद

पाकिस्तान मिल्ली मुस्लिम लीग (एमएमएल) ने 2 नवंबर को लाहौर की मीनार-ए-पाकिस्तान पर होने वाले अपने वार्षिक कार्यकर्ता सम्मेलन को स्थगित कर दिया है। एमएमएल को लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) और जमात-उद-दावा (जेयूडी) का राजनीतिक मोर्चा माना जाता है। ये गुट आतंकी हाफिज सईद के हैं, जिसे अपने भारत विरोधी रुख के लिए जाना जाता है। सईद की सरपरस्ती वाले एमएमएल के अपने सम्मेलन को टालने के पीछे की वजह भारतीय सेना के त्रिशूल अभ्यास को माना जा रहा है। लश्कर के सूत्रों ने सीएनएन-न्यूज18 को बताया कि बड़े पैमाने पर होने वाले इस सम्मेलन को स्थगित करने का फैसला संगठन के शीर्ष नेतृत्व के लिए बाहरी खतरों का हवाला देते हुए लिया गया। यह घटनाक्रम बढ़ते क्षेत्रीय तनाव और त्रिशूल सैन्य अभ्यास के बीच हुआ है। संगठन के कुछ लोगों का मानना है कि त्रिशूल को इस प्रोग्राम को स्थगित करने से जोड़ा जा सकता है। एमएमएल सम्मेलन टालने की घोषणा लश्कर कमांडरों ने नुक्कड़ सभाओं के जरिए अनौपचारिक रूप से की है। उन्होंने खुलासा किया कि इस निर्णय को समूह के प्रमुख हाफिज सईद ने मंजूरी दे दी है। सईद के व्यक्तिगत रूप से लाहौर सम्मेलन में उपस्थित होकर उसे संबोधित करने की संभावना थी। इस आयोजन की अभी तक कोई नई तारीख घोषित नहीं की गई है। लश्कर ही नहीं पाकिस्तानी सेना और सरकार भी त्रिशूल से चिंतित है। पाकिस्तान ने पांच दिनों के भीतर दूसरा नोटिस टू एयरमेन (NOTAM) जारी किया है। पाकिस्तान का 1 से 30 नवंबर तक प्रभावी यह नवीनतम NOTAM पाकिस्तान के हवाई क्षेत्र के बड़े हिस्से को, खासतौर से दक्षिणी और तटीय क्षेत्रों को बंद कर देता है। भारत की तीनों सेनाओं के अभ्यास 'त्रिशूल 2025' के बीच पाकिस्तान में हलचल देखी जा रही है। भारतीय सेना पाकिस्तान सीमा के पास त्रिशूल नाम का अब तक का संयुक्त युद्धाभ्यास कर रही है। 30 अक्टूबर को शुरू हुए और 10 नवंबर तक चलने वाले इस अभ्यास में तीनों सेनाओं के 25 हजार जवान शामिल हो रहे हैं। ऐसे में पाकिस्तान में इसको लेकर चिंता है। सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक बयान में कहा कि यह युद्धाभ्यास नियमित प्रकृति के हैं। हर साल तीनों सेनाओं का विशाल युद्धाभ्यास करना भारतीय सेना की परंपरा है। हालांकि इस दफा अभियानों का पैमाना, जटिलता और क्षेत्र काफी बड़ा है। त्रिशूल के दौरान कई संयुक्त युद्ध अभ्यास किए जाएंगे। इससे तीनों सेनाओं किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार रहती है।

किस आधार पर... शुभमन गिल को उपकप्तानी मिलने पर भड़का पूर्व भारतीय दिग्गज, टीम में जगह पर उठाए सवाल

एजेंसी नई दिल्ली

शुभमन गिल का टेस्ट और वनडे में भारत के लिए दमदार रिकॉर्ड है। हालांकि टी20 क्रिकेट में वह अभी तक छाप नहीं छोड़ पाए हैं। इसके बाद भी गिल को टीम का उपकप्तान बनाया गया है। एशिया कप में उनका बल्ला नहीं चला था। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बारिश से प्रभावित पहले टी20 में उन्होंने अच्छी पारी खेली लेकिन दूसरे में फेल रहे। गिल के ओपनिंग करने की वजह से संजू सैमसन का मध्यक्रम में खेलना पड़ रहा है। एशिया कप से अभी तक उन्होंने नौ पारियों में सिर्फ 169 रन बनाए हैं, जिनका औसत 24.14 रहा है। पूर्व भारतीय कप्तान कृष्णमाचारी श्रीकांत ने शुभमन गिल को टी20 इंटरनेशनल टीम का उपकप्तान बनाने को लेकर कड़ी आपत्ति जताई है। श्रीकांत ने कहा, 'वे अगले तीन मैचों में गिल को बाहर नहीं करेंगे। उन्हें किसी और बात की चिंता नहीं है। वह टी20 विश्व कप के लिए उपकप्तान हैं। यह तय है कि वह भविष्य के टी20 कप्तान हैं। इसलिए उन्हें उनके साथ खेलना होगा और बाकी टीम का संतुलन बनाना होगा। वह निश्चित रूप से खेलेंगे, वरना किस आधार पर उन्हें उपकप्तान बनाया गया है? पूर्व भारतीय ओपनर ने आगे तर्क दिया कि गिल की स्वचालित नियुक्ति ने यशस्वी जायसवाल जैसे फॉर्म में चल रहे बल्लेबाजों के अवसरों को छीन लिया है। श्रीकांत ने कहा- यशस्वी जायसवाल इंतजार कर रहे हैं। वह टीम में नहीं हैं। गिल के शामिल होने से संतुलन बिगड़ गया है, इसलिए वे निश्चित नहीं हैं कि क्या करना है। संजू सैमसन और तिलक वर्मा का कोई पोजिशन फिक्स नहीं है और अर्शदीप सिंह 11 से बाहर हो रहे हैं। एकमात्र अच्छी बात यह है कि टी20 विश्व कप भारत में है, इसलिए वे बच जाएंगे।' उन्होंने कहा- भारत में अभिषेक जैसे बहुत सारे खिलाड़ी हैं। अगर यशस्वी जायसवाल जैसे खिलाड़ियों को मौका दिया जाता है, तो वे उसका फायदा उठाएंगे। लेकिन अब उनके लिए टीम में आने का कोई रास्ता नहीं है। सिर्फ हार्दिक पांड्या ही 11 में आ सकते हैं और कोई नहीं। जायसवाल भी आईपीएल से आए हैं और उनका सभी प्रारूपों और आईपीएल में एक शानदार रिकॉर्ड है। मुझे यकीन नहीं है कि वह आईपीएल और टी20 में शानदार रिकॉर्ड के बावजूद क्यों नहीं खेल रहे हैं। उन्हें वही मौके दें, वह टॉप पर गेंदबाजों को ध्वस्त कर देंगे।

वसिम अकरम बने बाबर आजम के भक्त, रोहित शर्मा का रिकॉर्ड टूटते ही दिया बड़ा बयान

एजेंसी लाहौर

पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज वसीम अकरम ने खराब फॉर्म से जूझ रहे कप्तान बाबर आजम का पूरा समर्थन किया है। अकरम ने कहा है कि आलोचकों और फैंस को बाबर का साथ देना चाहिए, क्योंकि उनके पास अभी बहुत क्रिकेट बाकी है और वह देश के लिए बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। यह बयान ऐसे समय में आया है जब बाबर ने हाल ही में T20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम किया है। साउथ अफ्रीका के खिलाफ चल रही तीन मैचों की T20I सीरीज के दूसरे मुकाबले में बाबर आजम ने भारत के कप्तान रोहित शर्मा (4,231 रन) को पीछे छोड़ते हुए T20I में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए। इस मैच में पाकिस्तान ने 111 रनों के छोटे लक्ष्य को 9 विकेट से आसानी से हासिल कर सीरीज 1-1 से बराबर कर ली। बाबर ने इस मैच में सिर्फ 11 रन बनाकर नाबाद रहे,

लेकिन इस छोटी पारी ने उन्हें यह ऐतिहासिक रिकॉर्ड दिला दिया। अब उनके नाम 130 T20I मैचों में 4,234 रन दर्ज हैं, जिसमें 3 शतक और 36 अर्धशतक शामिल हैं। वसीम अकरम ने क्रिकेट पाकिस्तान से बात करते हुए जोर देकर कहा कि एक खराब दौर किसी भी महान खिलाड़ी की काबिलियत को परिभाषित नहीं करता। अकरम ने कहा, 'बाबर के पास अभी बहुत क्रिकेट बाकी है और वह पाकिस्तान के लिए बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। हम सभी को उनका समर्थन करना चाहिए।' बाबर ने एशिया कप सहित पिछली कुछ T20I सीरीज मिस की थीं और साउथ अफ्रीका के खिलाफ दो टेस्ट मैचों में भी उनका प्रदर्शन साधारण रहा था। अकरम का यह बयान ऐसे समय में आया है जब कप्तान को उनके प्रदर्शन के लिए लगातार आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है। रिकॉर्ड टूटने के अलावा, पाकिस्तान ने यह मैच एकतरफा अंदाज में जीता। पहले, सलमान मिर्जा और फहीम अशरफ की शानदार गेंदबाजी की बदौलत साउथ अफ्रीका सिर्फ 110 रन पर ऑल आउट हो गई। जवाब में सईम अयूब ने 38 गेंदों पर 71 रन की तूफानी पारी खेलकर पाकिस्तान को जीत दिलाई।

विश्व कप 2025 में लौरा वोल्वाई का जलवा, हरमनप्रीत कौर भी पीछे नहीं

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय महिला क्रिकेट टीम 8 साल बाद एक बार फिर आईसीसी विश्व कप का खिताबी मुकाबला खेलने के लिए तैयार है। फाइनल में भारत के सामने साउथ अफ्रीका की चुनौती है। साउथ अफ्रीका ने पहली बार इस टूर्नामेंट के खिताबी मुकाबले में जगह पक्की की है। भारत के पास भी विश्व कप की ट्रॉफी नहीं है। इस टूर्नामेंट में भारत की कप्तानी हरमनप्रीत कौर कर रही हैं। दूसरी तरफ साउथ अफ्रीका की कमान लौरा वोल्वार्ड्ट के हाथों में है। साउथ अफ्रीका ने लौरा वोल्वार्ड्ट के शतक की मदद से ही सेमीफाइनल में इंग्लैंड को हराया था। लौरा ने 169 रनों की ऐतिहासिक पारी खेली थी। उन्होंने 143 गेंदों का सामना किया और 20 चौकों के अलावा चार छक्के भी मारे थे। भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सेमीफाइनल में मुश्किल स्थिति में थी। वहां चौथे नंबर पर आकर हरमनप्रीत कौर ने 89 रन ठोके थे। 88 गेंदों की पारी में उन्होंने 10

चौके और दो छक्के मारे थे। महिला विश्व कप 2025 में सबसे ज्यादा रन लौरा वोल्वार्ड्ट ने बनाए हैं। 8 मैचों में वह 470 रन ठोक चुकी हैं। अन्य किसी भी बल्लेबाज के 400 रन भी नहीं हैं। लौरा ने ये रन 67 की औसत और 98 की स्ट्राइक रेट से बनाए हैं। इसमें 62 चौके और 6 छक्के शामिल हैं। 26 साल की साउथ अफ्रीकी कप्तान ने इंग्लैंड के खिलाफ ही वनडे क्रिकेट में अपने 5000 रन पूरे किए थे। 118 मैच के करियर में वह 50 की औसत से 5121 रन बना चुकी हैं। इसमें 10 शतक के अलावा 38 फिफ्टी शामिल हैं। 36 साल की हरमनप्रीत कौर का बल्ला टूर्नामेंट में उम्मीद के मुताबिक नहीं चला है। सेमीफाइनल से पहले सिर्फ इंग्लैंड के खिलाफ ही उन्होंने अर्धशतक लगाया था। 7 पारियों में अभी तक 34 की औसत और 91 की स्ट्राइक रेट से उन्होंने 240 रन बनाए हैं। वनडे करियर की बात करें तो हरमनप्रीत कौर के नाम 160 मैचों की 139 पारियों में 4325 रन हैं। उनका औसत 37 का है।

43 साल की उम्र में बने थे दुनिया में नंबर एक, अब दिग्गज खिलाड़ी रोहन बोपन्ना ने टेनिस को कहा अलविदा

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय टेनिस स्टार रोहन बोपन्ना ने शनिवार को पेशेवर खेल से संन्यास की घोषणा कर दी। इसी के साथ उनके दो दशक से भी ज्यादा लंबे करियर का अंत हो गया है। रोहन बोपन्ना ने इंस्टाग्राम स्टोर पर संन्यास की घोषणा करते हुए लिखा, 'अलविदा... पर अंत नहीं। आप किसी ऐसी चीज को कैसे अलविदा कहेंगे, जिसने आपके जीवन को एक अर्थ दिया? हालांकि, टूर पर 20 अविस्मरणीय वर्षों के बाद, अब समय आ गया है। मैं आधिकारिक तौर पर अपना संन्यास ले रहा हूं।' उन्होंने लिखा, 'जब मैं यह लिख रहा हूं, मेरा दिल एक साथ भारी भी है और आभारी भी। मैंने भारत के कूर्ग जैसे छोटे से शहर से अपनी यात्रा शुरू की। मैंने सर्व को मजबूत करने के लिए लकड़ी के लट्ठे काटे, स्टैमिना बढ़ाने के लिए कॉफी के बागानों में दौड़ा। आज दुनिया के सबसे बड़े एरीना की रोशनी में खड़ा होना किसी सपने जैसा लगता है।' स्टार खिलाड़ी ने लिखा- टेनिस मेरे लिए सिर्फ एक खेल नहीं रहा। इसने मुझे दिशा दी जब मैं भटका हुआ था, हिम्मत दी जब मैं टूटा था, और विश्वास दिलाया जब दुनिया ने मुझ पर शक किया। हर बार जब मैं कोर्ट पर उतरा, इस खेल ने मुझे धैर्य सिखाया, गिरकर दोबारा उठने की ताकत दी और तब लड़ना सिखाया जब अंदर से हार मान लेने का मन हुआ। सबसे बढ़कर, इसने मुझे हमेशा याद दिलाया मैंने क्यों शुरुआत की थी और मैं कौन हूं। यूएस ओपन के फाइनल के अलावा, बोपन्ना तीन और ग्रैंड स्लैम के फाइनल में भी पहुंचे। उन्होंने 2012 और 2015 में महेश भूपति और फ्लोरिन मर्जिया के साथ साल के अंत में हुए एटीपी फाइनल्स के फाइनल मुकाबले में भी हिस्सा लिया था। साल 2017 में फ्रेंच ओपन मिश्रित युगल जीतने वाले 45 वर्षीय बोपन्ना ने कई डेविस कप मुकाबलों और ओलंपिक खेलों में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया। 43 वर्ष की आयु में उन्होंने विश्व नंबर 1 रैंकिंग हासिल की। पुरुष युगल के अलावा, बोपन्ना ने 2017 में फ्रेंच ओपन में मिश्रित युगल भी जीता। रोहन बोपन्ना आखिरी बार पेरिस मास्टर्स 1000 में खेले थे, जहां उन्होंने एलेक्जेंडर बुब्लिक के साथ मिलकर खेला था।

व्यापार

चीन ने की बड़ी गलती...मेज पर रख दी बंदूक, अमेरिका का प्लान रेडी, खजाने की खोज में भारत बनेगा जोड़ीदार

एजेंसी नई दिल्ली

रेयर अर्थ पर लड़ाई ठंडी जरूरी हुई है। लेकिन, अभी यह खत्म होती नहीं दिख रही है। चोट खाने के बाद अमेरिका चीन के दबदबे का विकल्प तलाशने लगा है। अमेरिका के वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने इसके साफ संकेत दे दिए हैं। उन्होंने कहा है कि चीन ने रेयर अर्थ यानी दुर्लभ पृथ्वी खनिजों के निर्यात को रोकने की धमकी देकर बड़ी गलती की है। फाइनेंशियल टाइम्स को दिए इंटरव्यू में बेसेंट ने यह बात कही। बेसेंट के मुताबिक, चीन की इस धमकी के बाद अमेरिका अगले दो सालों में इन खनिजों के वैकल्पिक स्रोत खोजने की कोशिश करेगा। यह बयान अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की दक्षिण कोरिया में हुई मुलाकात के बाद आया है। दोनों नेताओं ने एशिया-पैसिफिक इकोनॉमिक कोऑपरेशन (एपीईसी) समिट के इतर करीब दो घंटे तक बातचीत की थी। बेसेंट ने कहा, 'चीन ने सबको खतरे से आगाह कर दिया है। उन्होंने एक बहुत बड़ी गलती की है। बंदूक मेज पर रखना एक बात है, हवा में गोलियां चलाना दूसरी बात।' बेसेंट का रेयर अर्थ पर चीन के निर्यात प्रतिबंध को 'गलती' बताना भारत के लिहाज से भी अहम है। इससे भारत के लिए रणनीतिक और आर्थिक अवसर

के दरवाजे खुल गए हैं। चूंकि रेयर अर्थ हाई-टेक इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा उपकरणों और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों की लाइफलाइन हैं। ऐसे में चीन पर अत्यधिक निर्भरता खत्म करने की अमेरिकी रणनीति भारत की खनिज संपदा और बढ़ती भू-राजनीतिक प्रासंगिकता पर केंद्रित हो सकती है। यह घटनाक्रम न केवल भारत को ग्लोबल सप्लाई चेन में 'गेम चेंजर' की भूमिका देगा, बल्कि चीन के दबाव का मुकाबला करने के लिए भारत-अमेरिका आर्थिक और रणनीतिक साझेदारी को भी नई ऊंचाई पर ले जा सकता है। बेसेंट ने यह भी बताया कि अमेरिका और चीन के लीडर्स के बीच 'संतुलन' बन गया है। अमेरिका ने चीन को चेतावनी दी है कि वह रेयर अर्थ को हथियार के तौर पर इस्तेमाल नहीं कर पाएगा। बेसेंट ने कहा, 'एक समझौता हुआ है कि बाकी सब चीजें वैसी ही रहने पर, हम एक संतुलन बनाकर रखेंगे और हम अगले 12 महीनों तक इस संतुलन में काम कर सकते हैं।' उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि चीन का अमेरिका पर दबदबा 12 से 24 महीने से ज्यादा नहीं टिक पाएगा। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि वे अभी ऐसा कर सकते हैं क्योंकि हमारे पास इसके जवाब में उपाय हैं।' इससे पहले डोनाल्ड ट्रंप ने चीन के शी जिनपिंग के साथ एक साल का ऐसा समझौता किया है जिसे बढ़ाया जा सकता है ताकि रेयर अर्थ मिनरल का निर्यात जारी रहे। चीन दुनिया में रेयर अर्थ मिनरल का सबसे बड़ा उत्पादक है। इनका इस्तेमाल लड़ाकू विमान, रोबोट, इलेक्ट्रिक वाहन और अन्य हाई-टेक उत्पादों को बनाने में होता है। चीन ने 9 अक्टूबर 2025 से इन खनिजों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया था। ट्रंप और जिनपिंग की यह मुलाकात दोनों देशों के बीच चल रहे व्यापार युद्ध के छह महीने बाद हुई थी। दोनों नेताओं ने एक-दूसरे पर भारी टैरिफ लगाए। बाद में टैरिफ शांति पर सहमति बनी थी। इसके बाद चीन ने अमेरिका और दुनिया के अन्य देशों को रेयर अर्थ के निर्यात पर अपना कंट्रोल जताया था। बेसेंट ने फाइनेंशियल टाइम्स को बताया, 'मुझे लगता है कि चीनी नेतृत्व उनके निर्यात नियंत्रण पर वैश्विक प्रतिक्रिया से थोड़ा चिंतित था।'

चीन के इस फैसले का भारत पर असर पड़ना तय, अब ऐसा क्या किया जो बदलेगा कीमतों का गणति

एजेंसी नई दिल्ली

चीन ने सोने की बिक्री पर लंबे समय से चली आ रही टैक्स छूट खत्म कर दी है। यह फैसला 1 नवंबर से लागू हो गया है। इस कदम से उपभोक्ताओं के लिए सोने की कीमतें बढ़ सकती हैं। यही नहीं, दुनिया के सबसे बड़े सोने के बाजारों में कीमतों का गणित बदल सकता है। चीन के वित्त मंत्रालय ने घोषणा की है कि अब सोने के खुदरा विक्रेता शंघाई गोल्ड एक्सचेंज से खरीदे गए सोने की बिक्री पर लगने वाले वैल्यू-एडेड टैक्स (वैट) को ऑफसेट नहीं कर पाएंगे। यह नियम सोने के सभी प्रकारों पर लागू है। चाहे वह सीधे बेचा जाए या गहने, सिक्के, उच्च-शुद्धता वाले बार या औद्योगिक सामग्री के रूप में तैयार किया जाए। यह चीन के कीमती धातु के टैक्सेशन स्ट्रक्चर में बड़ा बदलाव है। चीन के सोने की बिक्री पर छूट को खत्म करने के फैसले का भारत पर भी सीधा असर पड़ सकता है। भारत और चीन दोनों ही दुनिया में सोने के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं। चीन के बाजार में किसी भी बड़े बदलाव का असर वैश्विक सोने की कीमतों और ट्रेड डायनेमिक्स पर पड़ना तय है। इसका असर अप्रत्यक्ष रूप से भारत पर भी पड़ेगा। चीन में सोने की खरीद पर वैट छूट खत्म होने से खुदरा

लागत बढ़ जाएगी। अगर कीमतें बढ़ती हैं तो चीनी उपभोक्ताओं की तरफ से सोने की मांग कुछ समय के लिए नरम पड़ सकती है। चूंकि चीन सोने का सबसे बड़ा उपभोक्ता है, इसलिए उसकी घरेलू मांग में कमी आने से वैश्विक सोने की कीमतों पर थोड़ा दबाव आ सकता है। अगर ग्लोबल कीमतें नीचे आती हैं तो भारत के लिए सोना आयात करना सस्ता हो सकता है। चीन में सोने के महंगा होने से व्यापारी और खरीदार भारत, हांगकांग या सिंगापुर जैसे पड़ोसी बाजारों में कीमत के अंतर पर नजर रख सकते हैं। यह बदलाव क्रॉस-बॉर्डर गोल्ड ट्रेड फ्लो को प्रभावित कर सकता है। अगर चीन में कीमतें काफी बढ़ जाती हैं तो भारत (या अन्य नजदीकी बाजार) अंतरराष्ट्रीय गोल्ड ट्रेड में अधिक प्रमुखता हासिल कर सकते हैं। भारत अपनी सोने की ज्यादातर मांग को आयात के जरिये पूरा करता है। अगर वैश्विक सोने की कीमतें कम होती हैं तो भारत को उतना ही सोना खरीदने के लिए कम डॉलर खर्च करने पड़ेंगे। इससे देश का आयात बिल कम हो सकता है और रुपये को मजबूती मिल सकती है। यह फैसला ऐसे समय में आया है जब चीन की अर्थव्यवस्था कमजोर घरेलू मांग और धीमी ग्रोथ से जूझ रही है। सरकार नए राजस्व स्रोतों की तलाश कर रही है। इस टैक्स राहत को खत्म करने से सरकारी आय बढ़ने की उम्मीद है। हालांकि, विश्लेषकों का कहना है कि इससे अंतिम उपभोक्ताओं के लिए सोने की कीमतें बढ़ सकती हैं। छोटी अवधि में खुदरा मांग कम हो सकती है। कई सालों से चीन की वैट ऑफसेट प्रणाली ने खुदरा विक्रेताओं को शंघाई गोल्ड एक्सचेंज से खरीदे गए सोने की बिक्री पर अपना टैक्स बोझ कम करने की अनुमति देकर घरेलू सोने की कीमतों को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने में मदद की थी। इस फायदे के बिना खुदरा विक्रेताओं को अब कम मुनाफा मार्जिन का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें या तो अतिरिक्त लागत खुद वहन करनी होगी या ग्राहकों पर डालनी होगी।

गुलाबी नोटों की कहानी... क्या अभी मान्य हैं 2000 रुपये के करेंसी नोट, यह चौंकाने वाला अपडेट कैसा

एजेंसी नई दिल्ली

गुलाबी नोटों की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है। अभी भी ये चलन में हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शनिवार को इन्हें लेकर अपडेट जारी किया। आंकड़ों के अनुसार, 5,817 करोड़ रुपये मूल्य के 2,000 रुपये के नोट अभी भी लोगों के पास हैं। यह कुल 2,000 रुपये के नोटों का 1.63% है। 31 अक्टूबर 2025 तक ये वापस नहीं आए हैं। 19 मई 2023 को जब 2,000 रुपये के नोटों को वापस लेने की घोषणा की गई थी, तब चलन में कुल 3.56 लाख करोड़ रुपये के नोट थे। ये नोट अभी भी वैध मुद्रा के रूप में बने हुए हैं। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने 19 मई 2023 को 2,000 रुपये के नोटों को चलन से वापस लेने का फैसला किया था। हालांकि, ये नोट अभी भी कानूनी तौर पर मान्य हैं। आरबीआई ने बताया कि 31 अक्टूबर 2025 तक 2,000 रुपये के नोटों का कुल मूल्य जो चलन में था, वह घटकर 5,817 करोड़ रुपये रह गया है। इसका मतलब है कि 19 मई 2023 तक चलन में मौजूद 2,000 रुपये के नोटों में से 98.37% वापस आ चुके हैं। जिन लोगों के पास अभी भी 2,000 रुपये के नोट हैं, वे उन्हें बदलवा सकते हैं। आरबीआई के 19 इश्यू ऑफिसों में 19 मई 2023 से ही नोट बदलने की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा, 9 अक्टूबर 2023 से आरबीआई के इश्यू ऑफिस व्यक्तियों या संस्थाओं से उनके बैंक खातों में जमा करने के लिए 2,000 रुपये के नोट स्वीकार कर रहे हैं। अगर आप दूर रहते हैं और आरबीआई ऑफिस तक नहीं पहुंच सकते तो भी चिंता की कोई बात नहीं है। आप अपने 2,000 रुपये के नोटों को इंडिया पोस्ट के जरिए देश के किसी भी पोस्ट ऑफिस से आरबीआई के इश्यू ऑफिसों में भेज सकते हैं। ये नोट आपके बैंक खाते में जमा कर दिए जाएंगे। आरबीआई के ये 19 इश्यू ऑफिस देश के अलग-अलग शहरों में स्थित हैं। इनमें अहमदाबाद, बेंगलुरु, बेलपुर, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, जम्मू, कानपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, नई दिल्ली, पटना और तिरुवनंतपुरम शामिल हैं। आरबीआई समय-समय पर 2,000 रुपये के नोटों की वापसी की स्थिति के बारे में जानकारी देता रहता है।

कामदेव ने साधा नारद की समाधि पर निशाना, क्या मायावी शक्ति तोड़ पाएगी भक्ति की अग्नि

संसार की स्थिति अत्यंत विचित्र है। माया में उलझा हुआ जीव नीचे के पदों पर तो संतोष नहीं करता, परंतु ऊपर पहुँचकर भी उसे शांति प्राप्त नहीं होती। उसकी प्रत्येक इच्छा में स्वर्ग तुल्य सुख की आकांक्षा होती है। किंतु विचारणीय तथ्य यह है कि क्या वास्तव में स्वर्ग का सुख भी आत्मतृप्ति दे सकता है? विगत प्रसंग से तो ऐसा प्रतीत नहीं होता। क्योंकि जब स्वयं स्वर्ग के अधिपति देवराज इन्द्र ही अशांत हैं, तो अन्य जनों की स्थिति का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

जब देवराज इन्द्र ने देखा कि नारद मुनि दीर्घकाल से समाधि में लीन हैं, तो उनके मन में संशय का बीज अंकुरित हुआ—

"कहीं नारद मुनि मेरे इन्द्रासन पर तो दृष्टि नहीं रखे हुए हैं?" यह विचार आते ही उनका विवेक क्षीण हो गया। पद के अहंकार ने बुद्धि पर पर्दा डाल दिया। परिणामस्वरूप वे संशय के वशीभूत होकर कामदेव को बुलाते हैं और कहते हैं—

"मुनि गति देखि सुरेस डेराना।
कामहि बोलि कीन्ह सनमाना।।
सहित सहाय जाहु मम हेतू।
चलेउ हरषि हियँ जलचरकेतू।।"

देवराज इन्द्र ने कामदेव का यथोचित सम्मान किया, और उसे आदेश दिया- "हे कामदेव! आपकी शक्ति अपरंपार है। आप अनेक बार देवताओं के कार्य सिद्ध कर चुके हैं। आज आप नारद मुनि की समाधि भंग कर हमें इस शंका से मुक्ति दिलाइए।" कामदेव के लिए यह सम्मान अप्रत्याशित था।

संसार में "राम" के उपासक तो दुर्लभ हैं, किंतु "काम" के उपासक हर ओर विद्यमान हैं। फिर भी कामदेव के साथ एक शाप जैसा जुड़ा हुआ है—उसे कभी सार्वजनिक सम्मान नहीं मिलता। वह सदा गुप्त रूप से पूजित होता है, जैसे अंधकार में छिपी अग्नि। आज जब देवराज इन्द्र ने उसे साक्षात् बुलाकर सम्मान दिया, तो वह मानो अपने मोह के बंधन में स्वयं बँध गया। सम्मान का मद मनुष्य ही नहीं, देवों को भी विवेकहीन बना देता है। कामदेव ने यह सोचने की आवश्यकता नहीं समझी कि एक समय उसने भगवान शंकर की समाधि भंग करने का दुस्साहस किया था और उसका परिणाम क्या हुआ था। इतिहास की शिक्षा केवल वही ग्रहण करता है, जो अहंकार के पर्दे से मुक्त हो। किंतु यहाँ तो देवराज इन्द्र और कामदेव, दोनों ही उसी अहंकार के जाल में फँस चुके थे। देवराज इन्द्र की मूर्खता अपने चरम पर थी। उन्हें यह जाँचने की भी सूझ नहीं पड़ी कि नारद मुनि की समाधि का उद्देश्य क्या है। क्या वे सचमुच स्वर्ग-सिंहासन पर अधिकार चाहते हैं, या प्रभु-भक्ति में लीन हैं? परंतु जब मन पर पद का मद छा जाता है, तब सत्य की आवाज सुनाई नहीं देती। काश! इन्द्र को प्रभुचरणों की याद होती, तो वे यह समझ पाते कि प्रभु के भक्त के लिए स्वर्ग, केवल मृग-मरीचिका के समान है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस स्थिति का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है—

"सूख हाड़ लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जान जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज।।"

अर्थात जैसे मूर्ख कुत्ता अपनी सुखी हड्डी लेकर इसलिए भागता है कि कहीं सिंह उसे न छीन ले, वैसे ही मूढ़ इन्द्र भी नारद मुनि को देखकर भयभीत हो उठे कि कहीं वे उसका पद न छीन लें। परंतु जिन्हें प्रभु-भक्ति की समाधि की सर्वोच्च अवस्था प्राप्त हो चुकी है, उन्हें स्वर्ग के क्षणिक वैभव से क्या प्रयोजन? अब कामदेव, देवराज इन्द्र के आदेशानुसार, नारद मुनि की ओर प्रस्थान करता है। वहाँ पहुँचकर उसने अपनी मायावी शक्ति से वसंत ऋतु का सृजन कर दिया। क्षणमात्र में समस्त वातावरण परिवर्तित हो उठा। वृक्षों पर विविध रंगों के पुष्प खिल उठे, कोयल की मधुर कूक गूँजने लगी, भौंरे गुंजार करने लगे। सुगंधित पवन तीनों दिशाओं से बहने लगी, जो कामाग्नि को प्रज्वलित करती थी। रम्भा और अन्य देवांगनाएँ संगीत और नृत्य से वातावरण को और भी मनोहर बनाने लगीं।

कामदेव ने यह दृश्य देखकर हर्षित होकर कहा—

"अब तो यह समाधि अवश्य भंग होगी। नारद मुनि जैसे स्थिर तपस्वी भी इस वातावरण से विचलित हुए बिना न रह सकेंगे।"

परंतु यही कामदेव की भ्रांति थी। वह यह भूल गया कि भक्ति की ज्वाला में काम की अग्नि स्वयं भस्म हो जाती है।

नारद मुनि, जिनके हृदय में राम नाम का अनहद नाद गूँज रहा था, वे संसार के किसी भी आकर्षण से विचलित कैसे हो सकते हैं?

जिसकी दृष्टि "प्रेम" में स्थिर है, उसे "काम" डिगा नहीं सकता।

देवराज इन्द्र और कामदेव का यह प्रयत्न केवल यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त था कि जिस मनुष्य के अंतःकरण में असुरक्षा और अहंकार हो, वह देव होकर भी पतन के मार्ग पर चल पड़ता है।

प्रभु का सच्चा भक्त तो स्वयं में पूर्ण होता है। उसे पद, प्रतिष्ठा, यश या वैभव का मोह नहीं रहता। इन्द्र जैसे देवता, जो स्वर्ग के राजा होकर भी भयभीत हैं, वे वास्तव में दीन हैं। और नारद जैसे मुनि, जो संन्यासी होकर भी अटल हैं, वे वास्तव में धन्य हैं। अब प्रश्न यही है— क्या कामदेव अपनी शक्ति से नारद मुनि की समाधि को भंग कर पाता है? क्या देवराज इन्द्र का संशय सत्य सिद्ध होता है, अथवा वह स्वयं अपने भ्रम में फँस जाता है?

सर्दियों में गुनगुने पानी से नहाना चाहिए या ठंडे पानी से, प्रेमानंद महाराज ने दिया चौंकाने वाला जवाब

आज के समय में इंसान अपने हर काम में आराम और सुविधा चाहता है। चाहे सुबह उठना हो, नहाना हो या काम करना, हर जगह वह आसान रास्ता ढूंढता है। लेकिन यही आदत धीरे-धीरे इंसान को अंदर से कमजोर बना देती है। हमारे बड़े-बुजुर्ग हमेशा कहते आए हैं कि जो व्यक्ति हमेशा आराम की तलाश में रहता है, वह मुश्किल हालात में टिक नहीं पाता। पहले के लोग सादा जीवन जीते थे, साधारण खाना खाते थे और फिर भी उनका शरीर मजबूत और मन स्थिर रहता था। लेकिन आज सुख-सुविधाओं की अधिकता ने इंसान की सहनशक्ति और आत्मबल दोनों को कमजोर कर दिया है। वहीं सर्दियों में अक्सर लोग गर्म पानी से नहाना पसंद करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ऐसा करना आपके लिए फायदेमंद है भी या नहीं? ऐसे में आइए वृंदावन के प्रसिद्ध संत से जानते हैं कि क्या गर्म पानी से स्नान करना चाहिए या नहीं। एक भक्त ने प्रेमानंद महाराज जी से सवाल पूछा कि क्या हमें गर्म पानी से स्नान करना चाहिए? इस पर महाराज जी ने कहा कि अगर आप गर्म जल से स्नान करेंगे तो धीरे-धीरे कमजोर हो जाएंगे। उनका कहना था कि गर्म पानी शरीर को आराम तो देता है, लेकिन यह शरीर की प्राकृतिक ऊर्जा को खत्म करता है। जब इंसान ठंडे पानी से डरने लगता है, तो उसका शरीर और मन दोनों नाजुक हो जाते हैं। यही नाजुकता धीरे-धीरे व्यक्ति की सहनशक्ति और आत्मबल को समाप्त कर देती है। आगे प्रेमानंद महाराज कहते हैं कि इंसान को प्रकृति से भागना नहीं चाहिए, बल्कि उसके साथ तालमेल बैठाना सीखना चाहिए। जब व्यक्ति ठंडे जल से स्नान करता है, तो उसका शरीर प्रकृति की ठंडक को सहना सीखता है। इससे रक्त संचार बेहतर होता है, मानसिक दृढ़ता आती है और शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता है। यही प्राकृतिक ऊर्जा जीवन में अनुशासन और संयम बनाए रखने में मदद करती है। महाराज जी के अनुसार ठंडे जल से स्नान सिर्फ एक शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि एक तरह की तपस्या है। यह तपस्या शरीर और मन दोनों को शुद्ध करती है। ठंडे पानी की ठिठुरन हमें सहनशील बनाती है और भीतर से मजबूत करती है। जब व्यक्ति आराम की जगह तपस्या को चुनता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह अपने जीवन में बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है। प्रेमानंद महाराज ने यह भी कहा कि ब्रह्मचर्य केवल यौन संयम का नाम नहीं है, बल्कि यह अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाने की कला है। जब व्यक्ति ठंडे जल से स्नान जैसी छोटी-छोटी तपस्याएं करता है, तो उसका शरीर दृढ़ और मन संयमित बनता है। ऐसा व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रख पाता है और सही कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।

आज से शुरू होगा भीष्म पंचक, पूरे 5 दिन गलती से भी न करें ये काम, वरना पड़ सकता है पछताना

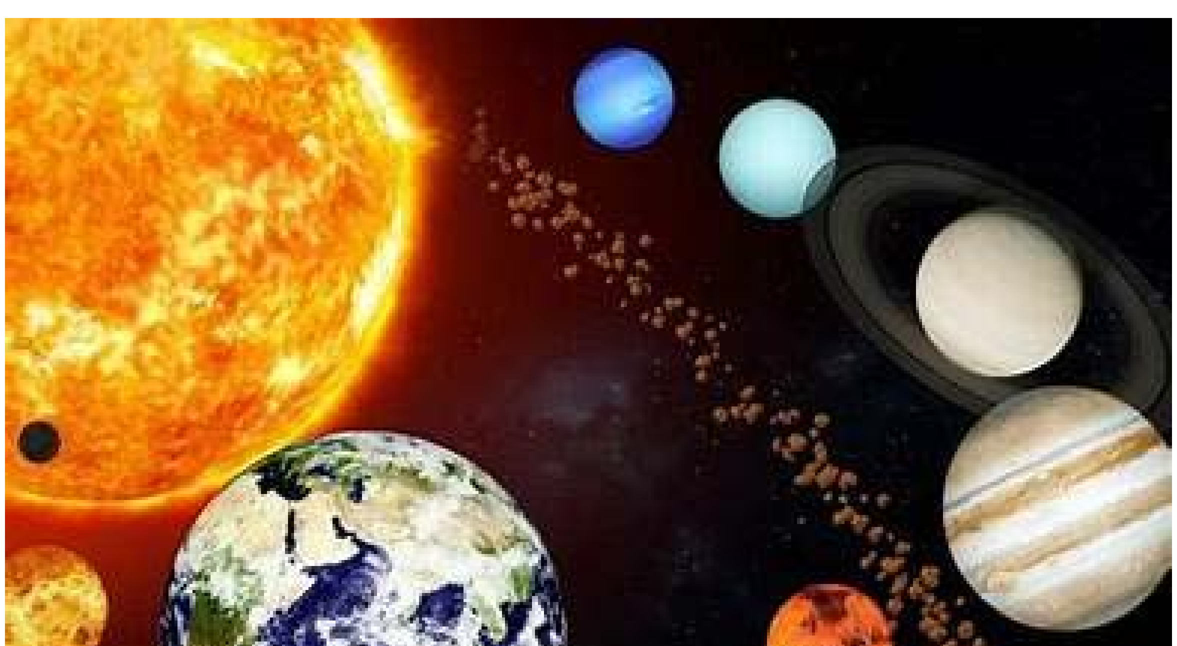

वैदिक ज्योतिष में पंचक काल को अत्यंत संवेदनशील समय माना गया है। हिंदू धर्म में इसे बेहद अशुभ काल माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, पंचक तब बनता है जब चंद्रमा कुंभ और मीन राशि के अंतिम पांच नक्षत्रों धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती से होकर गुजरता है। यह काल लगभग पांच दिनों तक चलता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, पंचक काल में किसी भी प्रकार के शुभ कार्य जैसे गृह प्रवेश, विवाह, नई वस्तु की खरीदारी या निर्माण कार्य आरंभ करना वर्जित माना जाता है। कहा जाता है कि इस दौरान शुरू किए गए कार्यों में बार-बार बाधाएं आती हैं या परिणाम अनुकूल नहीं मिलते। वहीं, इन दिनों में व्रत, पूजा और दान करने से हजार गुना अधिक पुण्य प्राप्त होता है। ऐसे में आइए जानते हैं नवंबर में कब से शुरू हो रहा है पंचक काल और इसमें कौन से कार्य वर्जित माने जाते हैं। द्रिक पंचांग के अनुसार, 1 नवंबर 2025 से पंचक शुरू हो रहा है, जिसका समापन 5 नवंबर को होगा। इसे भीष्म पंचक कहा जाएगा। बता दें कि कार्तिक मास में आने वाला पंचक को वैकुण्ठ पंचक या हरि पंचक के नाम से भी जाना जाता है। महाभारत के समय जब भीष्म पितामह ने इच्छा मृत्यु का व्रत लिया था, तब उन्होंने सूर्य के उत्तरायण होने की प्रतीक्षा की थी। कार्तिक मास की एकादशी से पूर्णिमा तक के इन पांच दिनों में उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया और पांडवों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का ज्ञान दिया। भगवान कृष्ण ने भी इन पांच दिनों को भीष्म पंचक नाम देकर इन्हें अत्यंत मंगलकारी बताया। इसलिए जब पंचक काल एकादशी के आसपास आता है, तो उसे भीष्म पंचक कहा जाता है। मान्यता है कि इस दौरान की गई पूजा, व्रत और दान से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पंचक काल में ना करें ये काम पंचक काल के दौरान किसी भी नए कार्य, व्यापार या बड़े निवेश की शुरुआत न करें।

पंचक काल में दक्षिण दिशा की यात्रा करने से बचें, इसे अशुभ माना जाता है।

घर में छत डालने, पेंटिंग या निर्माण संबंधी काम टाल दें।

चारपाई, फर्नीचर या पलंग बनवाना अथवा उसकी मरम्मत न करें।

इस दौरान नया सामान, कपड़े या कीमती वस्तुएं खरीदने से बचें।

अगर पंचक के दौरान किसी की मृत्यु हो जाए, तो आग्नि पंचक दोष से बचने के लिए एक पुतला बनाकर उसके साथ दाह संस्कार करना चाहिए।

पंचक काल में क्या करें?पंचक काल में अशुभ प्रभाव से बचने के लिए भगवान विष्णु और हनुमानजी की आराधना करें।

हनुमान चालीसा या विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें।

दक्षिण दिशा की यात्रा से पहले सरसों के तेल का दीपक दक्षिण दिशा में जलाएं।

यदि कोई कार्य अत्यावश्यक हो, तो रेवती नक्षत्र में हवन या दान करके शुभ फल प्राप्त किया जा सकता है।

आर्थिक राशिफल : रूचक योग से बुलंद होंगे मेष, मिथुन समेत इन राशियों के सितारें, चमकेगी किस्मत

मेष राशि आपकी राशि के एकादश भाव में चन्द्रमा तथा द्वादश भाव में शनि के आने से आपको आपके कार्य क्षेत्र या दफ्तर में कुछ नई जिम्मेदारियां दी जा सकती हैं। इस दौरान रचनात्मक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी। किसी प्रकार के शुभ समाचार के प्राप्त होने की संभावना दिख रही है। पुत्र अथवा पुत्री के विवाह का प्रसंग प्रबल होकर फाइनल हो सकता है।

वृष राशि आपकी राशि का स्वामी शुक्र उच्चाभिलाषी है। पंचम भाव में बैठकर एकादश को संपूर्ण शुभ दृष्टि से देख रहा है। शुक्र सांसारिक सुख भोगों के प्रतिनिधि है। ऐसे में आवश्यक सामान की खरीदारी में शाम तक का समय व्यतीत होगा। घर परिवार के वृद्धजनों से बहसबाजी में न उलझें। उनकी राय भी सुन लें, उपयोगी सिद्ध होगी।

मिथुन राशि नवम भाव में चन्द्रमा और राशि से नवम भाग्य भाव में कुंभ राशि का राहु आज आपको राज्य से सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा से अभिभूत करेगा। व्यापार के भागीदारों तथा पत्नी पक्ष से भी पूर्ण सहयोग मिलेगा। ऋण भार में कमी होगी। कुंभ राशि का राहु अकस्मात् अग्रि चोर भय कारक है। ऐसे में आपको सावधान रहना होगा।

कर्क राशि आपकी राशि पर मिथुन का बृहस्पति तथा अष्टम भाव में चन्द्रमा उत्तम संपत्ति और बहुत दिनों से रुके धन की प्राप्ति कराएंगे। नए संबंधों में स्थायित्व बनेगा। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में भी अच्छी सफलता मिल सकती है। रात्रि का समय मंगल उत्सव में प्रियजनों के साथ हर्षोल्लास में बीतेगा। मानसिक तनाव और भ्रम के कारण दैनिक कार्यों में बाधा तथा आवागमन में अवरोध उत्पन्न होगा।

सिंह राशि आज आप अपने निकटवर्ती व अन्य लोगों की भावनाओं को पहचानने की कोशिश करें। उनके अनुसार चलने का प्रयास करेंगे तो आपको आत्मसंतोष होगा। कभी कबार दूसरों की बात सुनने में कोई परेशानी नहीं है। दुकान या कार्यालय में भी टीमवर्क के जरिए ही आप किसी समस्या का हल निकालने में सफल होंगे।

कन्या राशि आपकी राशि से षष्ठम राहू संचार कर रहा है। चन्द्रमा षष्ठम त्रिकोण जन्म भाव में इष्ट मित्रों से निर्मूल विवाद तथा व्यर्थ कारक है। ऐसे में अपने आस पास खुशनुमा माहौल बनाने का प्रयास करें। कार्यालय में भी अकस्मात कोई नया परिवर्तन आपको आश्चर्य में डाल सकता है। महिला सहकर्मी व अधिकारी आपका सहयोग कर सकते हैं।

तुला राशि आज का दिन आपके लिए महान पुरुषों से मेल-जोल कारक है। अकस्मात अकल्पित उलट फेर में आपको लाभ मिल सकता है। नए कार्य में वैधानिक और तकनीकी पहलुओं पर गंभीरता पूर्वक विचार करने के उपरान्त ही कुछ निर्णय लें। घर के पुराने लटके हुए कार्यों को बना लेने का मौका भी मिलेगा।

वृश्चिक राशि आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहेगा। बिजनेस के सिलसिले में किसी की सलाह लेने की आवश्यकता पड़ सकती है। दिन के दूसरे भाग में महिला मित्रों के साथ समय व्यतीत होगा। मामला कार्यक्षेत्र का हो या घर का आप अपने सभी उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभा लेंगे।

धनु राशि आज का दिन मिश्रित फलकारक है। आप अपनी पुरानी देनदारियों से मुक्त हो सकते हैं। कार्यक्षेत्र में भी आपके सुझावों का स्वागत होगा। कुछ आवश्यक घरेलू सामान की खरीदारी करनी पड़ सकती है। अपनी जेब का खास ख्याल रखें। सायंकाल का समय घरवालों के साथ व्यतीत करें।

मकर राशि करियर राशिफलः आज के दिन किसी को उधार न दें

मकर राशि करियर राशिफलः आज के दिन किसी को उधार न दें

आज आपकी राशि से कोष का चन्द्रमा पास व दूर की यात्रा तथा राज्य विजय कारक है। बहन भाई के विवाह इत्यादि मांगलिक समारोह में शामिल होने का अवसर मिलेगा। कोई पुराना मित्र या रिश्तेदार अचानक आपके सामने आकर खड़ा हो सकता है। यदि कोई आपसे उधार मांगे तो कदापि न दें।

कुंभ राशि राशि का स्वामी शनि द्वितीय कोष केंद्र में राजनीतिक क्षेत्र में सफलता कारक है। सक्रिय राजनीति में भाग लेने का योग बन रहा है। प्रतिस्पर्धा में प्रतिद्वंदी आपके पीछे रह जाएंगे। दिन का उत्तरार्ध भी शुभ व्यय कीर्ति की वृद्धि का कारक है। पुण्य कार्यों पर भी व्यय हो सकता है।

मीन राशि राशि का स्वामी देवगुरु पिछले कई दिनों से मिथुन राशि का होकर चतुर्थ भाव में चल रहा है। चन्द्रमा भी एकादश केन्द्र का घर में उत्तम संपत्ति प्रदान करेगा। खोया हुआ धन या रुका हुआ पैसा मिल जायेगा। मंत्रणा शक्ति के बल पर किसी कठिन समस्या का समाधान भी हो जाएगा।

पैर की उंगलियों पर भी हैं बाल, सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार यह शुभ संकेत है या अशुभ

आपने चेहरे की बनावट और हाव-भाव से किसी के स्वभाव का अंदाजा लगाने की बात तो जरूर सुनी होगी, लेकिन क्या आप जानते हैं कि शरीर के कुछ खास अंग भी व्यक्ति के भाग्य और भविष्य का संकेत देते हैं? सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शरीर की बनावट, चेहरा, हावभाव, हाथ-पैरों की उंगलियां और उन पर मौजूद निशान या बाल भी व्यक्ति के व्यक्तित्व और भविष्य के संकेत देते हैं। तो चलिए सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार जानते हैं कि अगर किसी व्यक्ति के पैरों के अंगूठे या उंगलियों पर बाल हों तो इसका क्या मतलब होता है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, पैरों की उंगलियों या अंगूठे पर बाल होना शुभ माना जाता है। आमतौर पर इन बालों की संख्या बहुत कम होती है, लेकिन यह मामूली बाल भी बड़े संकेत छिपाए रहते हैं। कहा जाता है कि जिन लोगों के पैरों की उंगलियों पर बाल होते हैं, वे जीवन में धन-समृद्धि प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग अपने जीवन में अच्छी आर्थिक स्थिति हासिल करते हैं और नौकरी या व्यवसाय दोनों में सफलता पाते हैं। सामुद्रिक शास्त्र कहता है कि

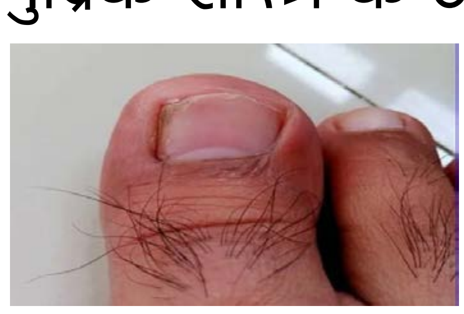

पैरों की उंगलियों पर बाल होना व्यक्ति के मजबूत भाग्य का संकेत है। ऐसे व्यक्ति मेहनती तो होते ही हैं, साथ ही उन्हें भाग्य का भी पूरा साथ मिलता है। वे अपने प्रयासों से जीवन में ऊंचाइयां छूते हैं और कभी हार नहीं मानते। व्यापार-नौकरी में ये लोग सफलता प्राप्त करते हैं। इनकी आर्थिक स्थिति मजबूत रहती है। जिन लोगों के पैरों की उंगलियों पर बाल होते हैं, वे केवल किस्मत के भरोसे नहीं रहते, बल्कि अपने कर्मों से सफलता प्राप्त करते हैं। वे बेहद कर्मठ और जिम्मेदार स्वभाव के होते हैं। उनकी मेहनत और लगन ही उन्हें दूसरों से अलग बनाती है। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार, ऐसे लोग अपने प्रभाव से हर किसी को प्रभावित करते हैं और जहां भी जाते हैं, वहां सम्मान पाते हैं। यह लोग अपने भाग्य के साथ-साथ कर्म पर भी भरोसा करते हैं, इसलिए जीवन में कभी खाली हाथ नहीं रहते। पैरों की उंगलियों पर बाल वाले व्यक्ति आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी होते हैं। ये अपनी बात पर अडिग रहते हैं और निर्णय लेने में हिचकिचाते नहीं हैं। इनमें नेतृत्व करने की क्षमता भी होती है।

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस मनाया गया महाविद्यालय में

भारत के दिल मध्यप्रदेश में धड़कता है -जन भागीदारी अध्यक्ष

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री सरदार विष्णु सिंग उईके शासकीय महाविद्यालय सारनी में शनिवार को उच्च शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश शासन के आदेशानुसार स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के अंतर्गत मध्यप्रदेश स्थापना दिवस मनाया गया। जिसमें प्रश्न मंच,पोस्टर निर्माण,वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया,कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती पूजा अर्चना के साथ की गई इसके पश्चात मध्यप्रदेश गान गाया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रदीप पंद्राम द्वारा मध्यप्रदेश के केंद्र बिंदु बरसाली के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई ।भौगोलिक दृष्टि से मध्यप्रदेश राज्य दूसरा सबसे बड़ा राज्य है मध्यप्रदेश के विविधता परिपूर्ण है यहां के नदियों के बारे भी में भी विस्तार पूर्वक विद्यार्थीयों को अवगत कराया। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए केवल शिक्षा,खेल ही नहीं बल्कि आईएस, आईपीएस बनने की प्रेरणा दी। और अपने क्षेत्र का नाम रोशन करने के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात् जन भागीदारी अध्यक्ष कमलेश सिंह अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "भारत का दिल धड़काता है तो वह मध्यप्रदेश मैं ही धड़काता है यहां विविधताओं और विशेषताएं से भरा हुआ है मध्यप्रदेश मैं ऐसे शहर हैं जो स्वच्छता में लगातर नंबर वन इंदौर एवं नंबर दो पर भोपाल शहर कायम है इसके बारे में आपने विस्तार से बताया साथ ही पार्षद दशरथ सिंह जाट द्वारा भी अपने विचार व्यक्त किए इसके पश्चात् भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ.अंजना संजय राठौर द्वारा भी विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए अपने विचार व्यक्त किए । कार्यक्रम का संचालन अर्चना महाले,डॉ.हरिश लोखंडे द्वारा किया गया एवं अंत में कार्यक्रम आभार डॉ.गोलमन आहके द्वारा किया गया कार्यक्रम में समस्त स्टाफ एवं भारी मात्रा में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

हाय रे यह बिजली कटौती

एक तरफ नो डिमांड की वजह से बंद हुई इकाई और दूसरी तरफ बिजली के लिए तरस रहे ग्रामीण

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

घोड़ाडोगरी ब्लॉक में 172 गांव आते हैं,शहरी क्षेत्र छोड़कर लेकिन कुछ दिनों से ग्रामीण क्षेत्रों में अघोषित बिजली कटौती से ग्रामीण इस तरह से परेशान है कि कुछ कहा नहीं जा सकता, जनप्रतिनिधियों को संपूर्ण क्षेत्र में रामराज्य दिखाई देता है जिसकी वजह से ग्रामीण चाह कर भी इन जनप्रतिनिधियों को कुछ कहने को तैयार नहीं है और यही वजह है कि लगातार ग्रामीण क्षेत्रों में 24 घंटे में से 8 से 14 घंटे बिजली की कटौती हो रही है।

आखिर बिजली की कटौती क्यों की जा रही है इस विषय में बिजली विभाग का कोई भी जिम्मेदार छोटा बड़ा अधिकारी कर्मचारी कुछ कहने को तैयार नहीं है। वहीं दूसरी तरफ मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के माध्यम से प्रदेश में बिजली की डिमांड ना होने के कारण सारनी ताप विद्युत गृहों की दो बड़ी इकाई एवं सिंगाजी ताप विद्युत गृहों की चार बड़ी इकाइयों को बंद कर दिया है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में अघोषित बिजली कटौती का कुछ लेखा-जोखा इस तरह है कि ग्रामीण बयान नहीं कर सकता ग्यारस के दिन यानी कि शनिवार को शाम 4 बजे से ग्रामीण क्षेत्र की बिजली गुल थी जो समाचार लिखे जाने तक ग्रामीण क्षेत्र में बिजली नहीं आ पाई थी इससे अंदाजा लगाया जा सकता है की तीज और त्योहार के समय में भी अघोषित बिजली कटौती ग्रामीण क्षेत्रों में किस कदर की हावी है आखिर जब बिजली की डिमांड नहीं है यह बताकर इकाई को बंद कर दिया गया है कहीं ऐसा तो नहीं की ग्रामीण क्षेत्र में बिजली का बिल उपभोक्ताओं के माध्यम से काम दिया जाता है इस वजह से अघोषित बिजली कटौती करके ग्रामीणों को मानसिक आर्थिक प्रताड़ित करने का नया कार्य बिजली विभाग के कर्मचारियों को मिला हो।

तीन नवंबर को आम आदमी पार्टी करेगी जनसंवाद

कमीशन खोरी भ्रष्टाचार सहित जनहित के मुद्दों को लेकर होगा संवाद

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

तीन नवंबर को आम आदमी पार्टी के माध्यम से सारनी के शॉपिंग सेंटर में जन संवाद कार्यक्रम किया जाएगा इसको लेकर आम आदमी पार्टी के माध्यम से तैयारी की जा रही है।आम आदमी पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष सिराज खान,ब्लाक अध्यक्ष रमेश भूमरकर,जिला शिक्षा विंग उपाध्यक्ष सुरेश जावलकर ने जानकारी देते हुए बताया कि आम आदमी पार्टी के प्रदेश सह सचिव अजय सोनी तीन नवंबर को शॉपिंग सेंटर सारनी में जन संवाद कार्यक्रम कर के जनता के मुद्दों एवं पालिका की कमीशन खोरी को उजागर करेंगे,उन्होंने कहा कि जन संवाद कार्यक्रम की सूचना सारनी थाना प्रभारी जयपाल इवानाती को पार्टी कार्यकर्ताओं के माध्यम से देने का कार्य किया जा चुका है।आम आदमी पार्टी जनता के मुद्दों को लेकर हमेशा अग्रणी रहती हैं। आम आदमी पार्टी के नेताओं ने कहा कि नगर पालिका में घटिया निर्माण कार्य एवं कमीशन खोरी जोरो पर चल रहा है। इसके अलावा जेम पोर्टल पर फर्जी कंपनियों के नाम पर सप्लाई एवं फर्जी बिलों को धड़ल्ले से निकला जा रहा है। साथ ही पिछले दिनों अखबारों में समाचार भी प्रकाशित हुआ था कि बाजार से 2 से 3 गुना महंगे दर पर बिजली शाखा के माध्यम से सामान की खरीदी करने का कार्य किया गया है जिसकी उच्च स्तरीय जांच की मांग की जाएगी।इन सभी मुद्दों को लेकर जन संवाद कार्यक्रम किया गया है।

पाथाखेड़ा एरिया के लिए पनौती साबित हुए महापात्र

सबसे ज्यादा दुर्घटना का रिकॉर्ड बना महापात्र के कार्यकाल में

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

वेस्टर्न कॉइल लिमिटेड पाथाखेड़ा की भूमिगत खदान सुरक्षा और उसके मापदंडों के दायरे में एशिया लेवल पर आती है लेकिन 2 वर्ष पूर्व कोयलांचल क्षेत्र पाथाखेड़ा में महाप्रबंधक के रूप में एल के महापात्र पदस्थ हुए। तो क्षेत्र में कोयले का उत्पादन और नई खदानों के प्रपोजल को लेकर उम्मीद की किरण जगी लेकिन यह सभी श्रमिक संगठन और क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों के अलावा कामगारों के लिए अच्छा साबित नहीं हुआ। इनके पदभार ग्रहण करने के बाद पाथाखेड़ा क्षेत्र का कोयले का उत्पादन एकदम से लड़खड़ा गया। सुरक्षा का स्तर कुछ इस कदर का गिरा की 50 साल की इतिहास में ऐसी दुर्घटना नहीं हुई जो इनके कार्यकाल में क्षेत्र के लोगों को देखना पड़ा। कोल इंडिया के इतिहास में पाथाखेड़ा के लिए 6 मार्च कल दिन रहा।छतरपुर वन की छत (स्लैब) गिरने से तीन मजदूरों की मौत हो गई थी। यह दुर्घटना वेस्टर्न कोल फील्ड्स लिमिटेड की छतरपुर-वन खदान में दोपहर करीब 3 बजे हुई थी। मृतकों की पहचान गोविंद कोसुरिया (सहायक प्रबंधक),रामप्रसाद चौहान (माइनिंग सरदार), और रामदेव पांडोले (ओवरमैन) के रूप में हुई थी। उसके बाद तो लगातार एक के बाद एक अनगिनत छुटपुट दुर्घटना हुई उसके बाद भी नागपुर हेड क्वार्टर का प्रबंध सोया रहा। क्षेत्र की भूमिगत खदानों में काम करने वाले श्रमिक संगठन के नेताओं की मान्य तो उनके पद स्थापना के बाद पाथाखेड़ा क्षेत्र में भ्रष्टाचार जमकर फला फूला छतरपुर वन के मैनेजर के माध्यम से कामगारों से जमकर उगाई करने का मामला सुर्खियां बटोरता रहा और महाप्रबंधक मौन सादे रहे। भूमिगत खदान में बंधुआ मजदूरों की तरह कर्मचारियों से व्यवहार किया गया माह प्रबंधक के लाल पिता शाही की वजह से तवा वन खदान तीन माह तक बंद रही। पाथाखेड़ा क्षेत्र के कामगारों के अर्थक प्रयास से दवा वन खदान से फिर कोयला उत्पादन शुरू कर दिया गया है लेकिन ओवर टाइम में उनके कार्यकाल के समय में मजदूरों को खून के आंसू बहाने पड़े। सूत्रों का तो यहां तक कहना है कि पाथाखेड़ा क्षेत्र के महा प्रबंधक महापात्र के माध्यम से बगडोना में संचालित होने वाले डब्ल्यूसीएल वर्कशॉप को बंद करने का प्रपोज भी हेड क्वार्टर नागपुर भेज दिया गया था। डब्ल्यूसीएल के पर्सनल विभाग का स्थानांतरण भी यहां से लेकर हेड क्वार्टर तक सुर्खियां बटोरता रहा। महापात्रा के कार्यकाल में मूलभूत सुविधा को लेकर श्रमिक संगठनों को आंदोलन करना पड़ा है तब जाकर व्यवस्था में कुछ सुधार हो पाया है कुल मिलाकर क्षेत्र के श्रमिक संगठन और मजदूरों के हिसाब से यदि चर्चा की जाए तो स्थानांतरण हुए महाप्रबंधक कोयलांचल क्षेत्र पाथाखेड़ा के लिए पूर्ण रूप से पनौती साबित हुए हैं, जिसकी वजह से श्रमिक संगठन कामगार और प्रबंधन के बीच जो सेतु का काम होता है वह कार्य को तोड़ा गया है जिसकी भरपाई हो पाना लंबे समय तक संभव दिखाई नहीं दे रही है।

डीजल में 1.09 पैसे और पेट्रोल में एक रुपए की बढ़ोतरी शनिवार सुबह 6 बजे से

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

शनिवार सुबह से अचानक पेट्रोल और डीजलों के मूल्य में वृद्धि हो जाने से डीजल और पेट्रोल के कार्य के दरों में भी प्रभाव पड़ने की संभावना बनी हुई है बताया जाता है कि डीजल में 1.09 पैसे और पेट्रोल में एक की बढ़ोतरी की गई है। बढ़ाएं गए पेट्रोल और डीजल के मूल्य शनिवार सुबह 6 से प्रभावित हो गए हैं। डीजल पर 1.09 पैसे की वृद्धि होने से ट्रांसपोर्ट सहित वह सभी सार्वजनिक कार्य जो डीजल के वाहन से संचालित होते हैं उन पर मूल्य वृद्धि का खशा असर देखने को मिलेगा। अब देखना है कि अचानक डीजल और पेट्रोल के मूल्य में किए गए वृद्धि को लेकर प्रतिपक्ष भूमिका का निर्वाह करने वाले कांग्रेस के माध्यम से इसका विरोध किया जाता है या नहीं।

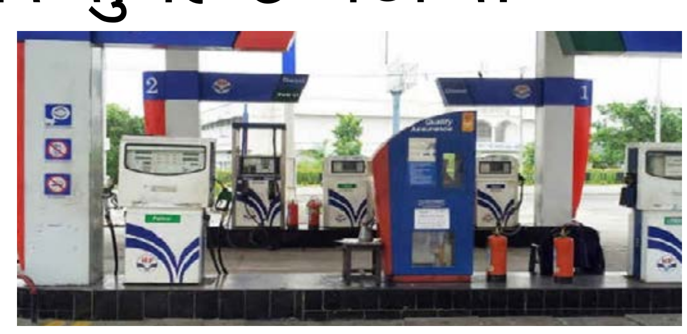

देव उठनी के अवसर पर बाजारों में जमकर बिके गन्ने

बर भाजी वाला और कृष्ण देव सावला लिखकर की गई पूजा

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

शनिवार को देव उठनी होने की वजह से शहरी और ग्रामीण क्षेत्र में गाने की बिक्री जमकर हुई है। बगडोना, शोभापुर,पाथाखेड़ा और सारनी में अलग-अलग स्थान पर गन्ने के व्यापारियों के माध्यम से अपनी दुकान लगाकर गाना विक्रय करने का कार्य किया गया। बताया जाता है कि देवउठनी एकादशी को हिंदू धर्म में विशेष महत्व दिया जाता है,

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को देवउठनी एकादशी कहा जाता है।इस एकादशी को देव प्रबोधिनी एकादशी और देवोत्थान एकादशी के नाम से भी जाना जाता है,पंचांग के अनुसार,देवउठनी एकादशी की तिथि एक नवंबर को सुबह 9 बजकर 11 मिनट पर शुरू हुई और समापन 2 अक्टूबर को सुबह 7 बजकर 31 मिनट पर होगा मान्यता है कि देवउठनी एकादशी के दिन माता तुलसी और भगवान विष्णु की पूजा करने से जीवन की सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं साथ ही सुख-शांति भी बनी रहती है। पौराणिक मान्यतानुसार इस एकादशी पर जगत के पालनहार श्रीहरि 4 माह की योगनिद्रा से जागते हैं और फिर से सृष्टि के संचालन की जिम्मेदारी संभालते हैं।इसी दिन चातुर्मास का समापन होता है और मांगलिक कार्य जैसे सगाई,शादी,मुंडन,भूमि पूजन और गृहप्रवेश की शुरुआत हो जाती है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेंट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित। (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949